सत्यमेव जयते

संस्करण : प्रथम

मरूधरा

वर्ष : 2022 – 2023

उप क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम

1/3 व 1/4, पाल लिंक रोड़, जोधपुर – 342008 (राज.)

दूरभाष : 0291–2945025

ई–मेल : *sro-jodhpur@esic.nic.in*

'मरुधरा' – जोधपुर मारवाड़

राजस्थान पुत्र-गर्भा सदा से रहा है। अगर भारत का इतिहास लिखना है तो प्रारंभ निश्चित रुप से इसी प्रदेश से करना होगा। यह प्रदेश वीरों का रहा है। यहाँ की चप्पा-चप्पा धरती शूरवीरों के शौर्य एवं रोमांचकारी घटनाचक्रों से अभिमण्डित है। राजस्थान में कई गढ़ एवं गढ़ैये ऐसे मिलेंगे जो अपने खण्डहरों में मौन बने युद्धों की साक्षी के जीवन्त अध्याय हैं। यहाँ की हर भूमि युद्धवीरों की पदचापों से पटी हुई है।

प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासविद जेम्स टॉड राजस्थान की उत्सर्गमयी वीर भूमि के अतीत से बड़े अभिभूत होते हुए कहते हैं, "राजस्थान की भूमि में ऐसा कोई फूल नहीं उगा जो राष्ट्रीय वीरता और त्याग की सुगन्ध से भरकर न झूमा हो। वायु का एक भी झोंका ऐसा नहीं उठा जिसकी झंझा के साथ युद्ध देवी के चरणों में साहसी युवकों का प्रथान न हुआ हो।"

आदर्श देशप्रेम, स्वातन्त्रय भावना, जातिगत स्वाभिमान, शरणागत वत्सलता, प्रतिज्ञा-पालन और सर्व समर्पण इस भूमि की अन्यतम् विशेषताएँ हैं। "यह एक ऐसी धरती है जिसका नाम लेते ही इतिहास आँखों पर चढ़ आता है, भुजाएँ फड़कने लग जाती हैं और खून उबल पड़ता है। यहाँ का जर्रा-जर्रा देशप्रेम, वीरता और बलिदान की अकूट गाथा से ओतप्रोत अपने अतीत की गौरव-घटनाओं का जीता-जागता इतिहास है। इसकी माटी की विशेषता है कि यहाँ जो भी माई का लाल जन्म लेता है, प्राणों को हथेली पर लिये मस्तक की होड़ लगा देता है। यहाँ का प्रत्येक पूत अपनी आन पर अड़िग रहता है। बान के लिये मर मिटता है और शान के लिए शहीद होता है।"

राजस्थान भारत वर्ष के पश्चिम भाग में अवस्थित है जो प्राचीन काल से विख्यात रहा है। तब इस प्रदेश में कई इकाईयाँ सम्मिलित थी जो अलग-अलग नाम से सम्बोधित की जाती थी। उदाहरण के लिए जैसलमेर राज्य के अधिकांश भाग वल्लदेश में सम्मिलित थे तो जोधपुर मरुदेश के नाम से जाना जाता था। बीकानेर राज्य तथा जोधपुर का उत्तरी भाग जांगल देश कहलाता था तो दक्षिणी बाग गुर्जरत्रा (गुजरात) के नाम से पुकारा जाता था।

इन राज्यों के नामों के साथ-साथ इनके कुछ भू-भागों को स्थानीय एवं भौगोलिक विशेषताओं के परिचायक नामों से भी पुकारा जाता है। मरु भाग के अन्तर्गत रेगिस्तानी भाग को मारवाड़ भी कहते हैं।

राजस्थानी भाषा को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। इनमें पहला पश्चिमी राजस्थानी तथा दूसरा पूर्वी राजस्थानी। पश्चिमी राजस्थानी की मारवाड़ी, मेवाड़ी, बागड़ी और शेखावटी नामक चार बोलियाँ मुख्य हैं, जबकि पूर्वी राजस्थानी की प्रतिनिधी बोलियों में ढूंढ़ाही, हाड़ौती, मेवाती और अहीरवाटी है। ढूंढ़ाही को जयपुरी भी कहते हैं।

पश्चिमी अंचल में राजस्थान की प्रधान बोली मारवाड़ी है। इसका क्षेत्र जोधपुर, सीकर, नागौर, बीकानेर, सिरोही, बाड़मेर, जैसलमेर आदि जिलों तक फैला हुआ है। साहित्यिक मारवाड़ी को डिंगल तथा पूर्वी राजस्थानी के साहित्यिक रुप को पिंगल कहा गया है। जोधपुर क्षेत्र में विशुद्ध मारवाड़ी बोली जाती है।

बोलियों के लिए जिस प्रकार यह कहा जाता है कि यहां हर बारह कोस पर बोली बदली हुई मिलती हैं – बारां कोसां बोली बदले, उसी प्रकार हर दस कोस पर गढ़ मिलने की बात सुनी जाती है। छोट-बड़ा कोई गढ़-गढ़ैया ऐसा नही मिलेगा जिसने अपने आंगन में युद्ध की तलवार न तानी हो। खून की छोटी-मोटी होली न खेली हो और दुश्मनों के मस्तक को मैदानी जंग में गेंद की तरह न घुमाया हो। इन किलों का एक-एक पत्थर अपने में अनेक-अनेक दास्तान लिये हुए है। उस दास्तान को सुनते ही इतिहास आँखों पर चढ़ आता है और रोम-रोम तीर-तलवार की भांति अपना शौर्य लिये फड़क उठता है।

अनुक्रमणिका

प्रवेशांक : 2022–23

क्र.सं.	शीर्षक / रचना	रचनाकार	पृष्ठ
1.			
2.			
3.			
4.			
5.			
6.			
7.			
8.			
9.			
10.			
11.			
12.			
13.			
14.			
15.			
16.			
17.			
18.			
19.			
20.			
21.			
22.			
23.			
24.			
25.			
26.			
27.			
28.			
29.			
30.			
31.			

क्र.सं.	शीर्षक / रचना	रचनाकार	पृष्ठ
32.			
33.			
34.			
35.			
36.			
37.			
38.			
39.			
40.			
41.			
42.			
43.			
44.			
45.			

संरक्षक

श्री अशोक कुमार रावत
क्षेत्रीय निदेशक, जयपुर एवं संयुक्त निदेशक (प्रभारी), जोधपुर

संपादक मण्डल

श्री राजेन्द्र कुमार मीना
उप निदेशक (रा.भा.प्र.)
मुख्य संपादक

श्री हीरालाल शर्मा
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी
सदस्य

श्री राजेश सोनी
सहायक
सदस्य

श्री गणेश चौधरी
सहायक
सदस्य

सुश्री अपूर्वा जैन
आशुलिपिक
सदस्य

–: नोट :–

इस पत्रिका में व्यक्त विचार / लेख / रचनाएँ / संकलित सामग्री रचनाकारों के अपने है। इनसे संपादकीय या विभागीय सहमति आवश्यक नहीं है। किसी कॉपीराइट के उल्लंघन के लिए रचनाकार जिम्मेदार है।

प्रकाशक
उपक्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम
1 / 3 व 1 / 4, पाल लिंक रोड़
जोधपुर - 342008

केवल निःशुल्क वितरण के लिए

क.रा.बी.नि.
ESIC

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

सत्यमेव जयते

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली - 110002
PANCHDEEP BHAWA, C.L.G., MARG, NEW DELHI - 110002
Tel.: 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

श्री मुखमीत सिंह भाटिया
महानिदेशक

संख्या : ए - 49/17/1/2016-रा.भा.
दिनांक : 08.08.2022

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, जोधपुर अपनी गृह पत्रिका 'मरुधरा' का प्रथम संस्करण (वर्ष 2022-23) का प्रकाशन करने जा रहा है। आशा है कि इस पत्रिका में विविध प्रकार के लेखों का समावेश होगा तथा मौलिक रचनाओं की प्रस्तुति के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और कार्यालय में हिंदी प्रयोग में वृद्धि होगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी ओर से हार्दिक मंगलकामनाएं।

मु. भाटिया
(मुखमीत सिंह भाटिया)

श्री अशोक कुमार रावत
क्षेत्रीय निदेशक (प्रभारी)
उप-क्षेत्रीय कार्यालय,
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
1/3 व *1/4* पाल लिंक रोड़
जोधपुर (राज.) - 342008

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

क.रा.बी.नि.
ESIC

सत्यमेव जयते

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली - 110002
PANCHDEEP BHAWAN, C.L.G., MARG, NEW DELHI - 110002
Tel.: 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

सुश्री टी.एल. यादेन
वित्त आयुक्त

संख्या : ए - 49 / 17 / 2 / 2016-रा.भा.
दिनांक : 29.07.2022

<u>संदेश</u>

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, जोधपुर अपनी विभागीय हिन्दी गृहपत्रिका 'मरुधरा' के प्रथम संस्करण (वर्ष 2022-23) का प्रकाशन करने जा रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से निगम के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों को अपनी रुचि के अनुसार लेखन प्रतिभा की अभिव्यक्ति का अवसर मिलेगा।

गृहपत्रिका 'मरुधरा' के प्रथम संस्करण के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाऐं।

टी एल यादेन
(टी.एल.यादेन)

श्री अशोक कुमार रावत
क्षेत्रीय निदेशक (प्रभारी)
उप-क्षेत्रीय कार्यालय,
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
1/3 व *1/4* पाल लिंक रोड़
जोधपुर (राज.) - 342008

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

क.रा.बी.नि.
ESIC

सत्यमेव जयते

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली - 110002
PANCHDEEP BHAWAN, C.I.G., MARG, NEW DELHI - 110002
Tel.: 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

दीपक जोशी
अपर आयुक्त (राजभाषा)

संख्या : ए - 49 / 17 / 3 / 2016-रा.भा.
दिनांक : 29.07.2022

<u>संदेश</u>

यह जानकर खुशी हुई है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, जोधपुर अपनी गृह पत्रिका 'मरुधरा' के प्रथम संस्करण (वर्ष 2022-23) का प्रकाशन कर रहा है। इस पत्रिका की संरचना से लेकर प्रकाशन से संबंध सभी कार्मिक बधाई के पात्र हैं। आशा है कि उनकी मौलिक रचनाओं के विशिष्ट योगदान से पत्रिका रुचिकर बनेगी तथा पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल रहेगी।

गृत्रिका पत्रिका 'मरुधरा' के प्रथम संस्करण के प्रकाशन के लिए मंगलकामनाएं।

(दीपक जोशी)

श्री अशोक कुमार रावत
क्षेत्रीय निदेशक (प्रभारी)
उप-क्षेत्रीय कार्यालय,
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
1/3 व *1/4* पाल लिंक रोड़
जोधपुर (राज.) - 342008

क.रा.बी.नि.
ESIC

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

सत्यमेव जयते

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली - 110002
PANCHDEEP BHAWAN, C.I.G., MARG, NEW DELHI - 110002
Tel.: 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

श्री अशोक कुमार रावत
क्षेत्रीय निदेशक (प्रभारी)

संरक्षक की कलम से ...

मुझे अत्यंत खुशी की अनुभूति हो रही है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, जोधपुर, द्वारा राजभाषा हिन्दी की गृहपत्रिका 'मरुधरा' के प्रथम संस्करण (वर्ष 2022-23) आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।

भाषायी वर्गीकरण के आधार पर उप क्षेत्रीय कार्यालय, जोधपुर 'क' क्षेत्र के अंतर्गत आता है तथा मुख्य संपादक व उनकी टीम द्वारा इस गृहपत्रिका 'मरुधरा' के प्रथम संस्करण की विभिन्न रचनाओं का संकलन व प्रकाशन का कार्य किया है। इस कार्य में सभी का अथक प्रयास, उनके नए कार्य करने की योजना, आंतरिक विश्लेषण क्षमता, मौलिक विचारों को अभिव्यक्त करने की शैली एवं लेखन क्षमता के परिणामस्वरुप गृहपत्रिका 'मरुधरा' का प्रकाशन संभव हो सका है।

निःसन्देह इस गृह पत्रिका का नामकरण 'मरुधरा' होना बहुत ही यथार्थ और मार्मिक है, जो कि संस्कृत शब्द मरुवत से लिया गया है। इस पत्रिका में ज्ञानवर्धक रचनाएं होने के साथ - साथ समावेशिता का ध्यान रखने का प्रयास किया गया है जो कि हिन्दी के प्रति कर्मचारियों की कर्मठता व रुचि दर्शाता है।

मैं निगम के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं पाठकों से अपने महत्वपूर्ण सुझाव भेजने की अपेक्षा करता हूं।

अशोक

दिनांक : 12.07.2022

(अशोक कुमार रावत)

क.रा.बी.नि.
ESIC

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

सत्यमेव जयते

पंचदीप भवन, भवानीसिंह मार्ग, ईएसआईसी कॉलोनी, सी - स्कीम
अशोक नगर, जयपुर (राज.) - 302001
PANCHDEEP BHAWAN, BHAWANI SINGH ROAD, ESIC COLONY
C SCHEME, ASHOK NAGAR, JAIPUR (Raj.) - 302001
Tel.: 0141-2226133 Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

श्री संत कुमार पाण्डेय
सहायक निदेशक (राजभाषा) राज.

सहायक निदेशक (रा.भा.) की कलम से ...

यह हर्ष का विषय है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, जोधपुर, द्वारा राजभाषा हिन्दी की गृहपत्रिका 'मरुधरा' के प्रथम संस्करण (वर्ष 2022-23) का प्रकाशन अपने नाम के अनुसार मार्मिकता से भरा है, जो कि मारवाड़ शब्द संस्कृत के शब्द 'मरुधरा' से है। इस पत्रिका में ज्ञानवर्धक रचनाएँ होने के साथ-साथ रुचिपरक रचनाएं भी हैं। यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार में एक मृदु शक्ति का काम करेगी है और कार्मिकों को राजभाषा में आधिकारिक कार्य करने व अपने बौद्धिक मनः स्थिति को व्यक्त करने के लिए अभिप्रेरित करेगी। इसके माध्यम से राजस्थान की संस्कृति की झलक भी देखने को मिलेगी।

मैं, गृहपत्रिका 'मरुधरा' के प्रथम संस्करण (वर्ष 2022-2023) के सफल प्रकाशन के लिए उप क्षेत्रीय कार्यालय, जोधपुर में कार्यरत सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को विशेष बधाई देता हूं। साथ ही, राजभाषा अधिकारी (प्रभारी) के अथक प्रयासों के लिए साधुवाद देता हूं जिनके सहयोग से इस पत्रिका का प्रकाशन संभव हो पाया है। यह पत्रिका एक मात्र पत्रिका ही नहीं अपितु कार्यालय की अनुपालन स्थिति का दर्पण है।

मेरी तरफ से संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ तथा इस कामना के साथ कि वे आगे भी इस पत्रिका की रचनाओं के माध्यम से हमारा ज्ञानवर्धक कराते रहेंगे। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ आप सभी का धन्यवाद।

दिनांक : 04.08.2022

(संत कुमार पाण्डेय)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

क.रा.बी.नि.
ESIC

सत्यमेव जयते

1 / 3 व 1 / 4, पाल लिंक रोड़, जोधपुर - 342008
1/3 - 1/4, PAL LINK ROAD, JODHPUR (Raj.) - 342008
Tel.: 0291-2945025
E-mail : sro-jodhpur@esic.nic.in

श्री रमेश राय
उपनिदेशक, उ.क्षे.का,
क.रा.बी.निगम, जोधपुर

विशेष आभार प्रकाशन ...

यह प्रसन्नता का विषय है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, जोधपुर की विभागीय हिन्दी गृहपत्रिका 'मरुधरा' के प्रवेशांक - प्रथम संस्करण (वर्ष 2022-23) का प्रकाशन हमारे संरक्षक श्री अशोक कुमार रावत, क्षेत्रीय निदेशक (प्रभारी) व क्षेत्रीय निदेशक, राजस्थान के मार्गदर्शन में हो रहा है, जिसमें इस पत्रिका के सफल प्रकाशन करने के कार्य में मेरी छोटी सी भूमिका में मैं गर्व महसूस कर रहा हूँ। इस पत्रिका के माध्यम से सभी कर्मचारियों, उनके आश्रितों, सेवानिवृत्त कर्मचारियों, बीमित कर्मचारियों को अपनी लेखन प्रतिभा की अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान किया गया है। विशेष तौर पर श्री राजेंद्र कुमार मीणा, उप निदेशक राजभाषा प्रभारी के साथ - साथ उनके संपादक मण्डल द्वारा बड़ी गहनता व मेहनत से राजभाषा को और ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए सभी कर्मिकों, बीमित कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने व उनके स्वछंद विचारों को नई उड़ान व कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों को बड़े ही सहज ढंग से प्रस्तुत करने के लिए प्रशंसनीय कार्य किया है।

पत्रिका के लिए मेरी ओर से प्रधान संपादक व संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई व मंगलकामनाएँ।

दिनांक : 04.08.2022

(रमेश राय)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)
क.रा.बी.नि.
ESIC

सत्यमेव जयते

1 / 3 व 1 / 4, पाल लिंक रोड़, जोधपुर - 342008
1/3 - 1/4, PAL LINK ROAD, JODHPUR (Raj.) - 342008
Tel.: 0291-2945025
E-mail : sro-jodhpur@esic.nic.in

प्रधान संपादक की कमल से ...

श्री राजेन्द्र कुमार मीणा
उपनिदेशक (राजभाषा प्रभारी)
क.रा.बी.निगम, जोधपुर

मुझे अत्यंत हर्ष के साथ लिखते हुए खुशी व गौरव की अनुभूति हो रही है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, जोधपुर द्वारा राजभाषा हिन्दी की गृहपत्रिका 'मरुधरा' के प्रवेशांक - प्रथम संस्करण (वर्ष 2022 - 23) में मेरे व मेरे साथियों द्वारा अपने स्वरचित, आछादित व स्वछंद विचार इस पत्रिका के माध्यम से आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे है।

इस कार्यालय में कनिष्ठ अनुवादक अधिकारी के रिक्त पद होने के बावजूद, मेरी टीम के सभी साथीगणों ने बिना कहे इस कार्य परियोजना को चुनौतिपूर्ण लिया और इस कार्यालय के साथ - साथ अधीनस्थ कार्यालयों में कार्यरत अधिकारियों व कर्मचारियों ने दृढ़तापूर्वक अपने उत्तरदायित्व एवं कर्त्तव्य का पालन करते हुए, स्वेच्छिक रुप से बढ - चढ़कर रचनाएँ समय पर प्रस्तुत की। जिसके उपरांत गृहपत्रिका की टीम के सदस्यों द्वारा दिये गए व्यक्तिगत कार्यक्षेत्रों में समय पर अनुपालना सुनिश्चित की। गृहपत्रिका 'मरुधरा' का उद्देश्य आंतरिक विश्लेषण क्षमता, मौलिक विचारों को अभिव्यक्त करने की शैली एवं लेखन क्षमता को बढ़ावा देना है।

गृहपत्रिका 'मरुधरा' प्रवेशांक - प्रथम संस्करण सुचारु रुप से सफल प्रकाशन हेतु, मैं श्री अशोक कुमार रावत, क्षेत्रीय निदेशाक (प्रभारी), जोधपुर के मार्गदर्शन, श्री रमेश राय, उपनिदेशक व संपादकीय सदस्यों का तहेदिल से शुक्रिया व आभार व्यक्त करता हूँ। साथ - साथ मैं, उन सभी कर्मचारीगण, उनके आश्रितों, सेवानिवृत्त कर्मचारियों, बीमित कर्मचारियों को, जिनकी रचनाऐं, लेख एवं अन्य सामग्री को इस पत्रिका में प्रकाशित किया है, आप सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

सभी पाठकगणों से आशा एवं अनुरोध है कि इस गृहपत्रिका 'मरुधरा' में प्रकाशित विभिन्न रचनाओं एवं कृतियों के संबंध में अपने अमूल्य विचरों, भावों एवं सुझावों के माध्यम से अपना सहयोग प्रदान करें, जिससे आने वाले अंक को और मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक के साथ सकारात्मक अनुभूति पढ़ने के दौरान आये। इसी कामना के साथ आप सभी का धन्यवाद!

दिनांक : 04.08.2022

(राजेन्द्र कुमार मीणा)

आओ राजभाषा हिन्दी को दिल से समझे .....

प्रश्न 1. संविधान के किस अनुच्छेद के अनुहंदी देश की राजभाषा है ?

उत्तर भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार हिंदी हमारे देश की राजभाषा है । इस अनुच्छेद में ये व्यवस्था है कि संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी । संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रुप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रुप होगा ।

प्रश्न 2. राजभाषा नियम, 1976 के अनुसार भारत को कितने क्षेत्रों में बांटा गया है ? प्रत्येक क्षेत्र में स्थित राज्यों के नाम लिखें ।

उत्तर (1) 'क' क्षेत्र - हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, झारखंड, दिल्ली और अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह ।

(2) 'ख' क्षेत्र- पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, दमण और दीव, दादरा और नगर हवेली तथा चंडीगढ़

(3) 'ग' क्षेत्र- जम्मू कश्मीर, असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपूर, मेघालय, मिजोराम, त्रिपुरा, सिक्किम, नागालैंड, पश्चिम बंगाल, उड़िसा, आंध्र प्रदेश, केरल, कर्नाटक, तमिलनाडू, गोवा, पांडिचेरी, लक्षदीप ।

प्रश्न 3. संविधान की अष्टम अनुसूची में शामिल भाषाओं के नाम लिखें ।

उत्तर 1. असमिया, 2. उड़िया, 3. उर्दू, 4. कन्नड, 5. कश्मीरी, 6. कोंकणी, 7. गुजराती, 8. डोंगरी, 9. तमिल 10. तेलगू 11. नेपाली, 12. पंजाबी, 13. बांग्ला, 14. बोडो, 15. मणिपुरी, 16. मराठी, 17. मलयालम 18. मैथिली, 19. संथाली, 20. संस्कृत, 21 सिंधी, 22. हिंदी

प्रश्न 4. राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3) के अंतर्गत कौन-कौन से कागजात आते है ?

उत्तर 1. संकल्प, 2. सामान्य आदेश, 3. नियम, 4. अधिसूचनाएं, 5. प्रशासनिक और अन्य रिपोर्ट, 6. प्रेस विज्ञप्ति, 7. संविदा, 8. करार, 9. लाइसेंस, 10. परमिट, 11. सूचना, 12. निविदा प्रारुप 13. संसद के किसी सदन के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक/अन्य रिपोर्ट 14. अन्य कागजात

प्रश्न 5. राजभाषा और राष्ट्रभाषा में क्या अंतर है ?

उत्तर सरकार का सरकारी काम-काज जिस भाषा में किया जाता है वह राजभाषा है और देश की अधिकांश जनता जिस भाषा को बोलती है उसे राष्ट्रभाषा कहते हैं अर्थात् पूरे राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने वाली भाषा ही राष्ट्रभाषा कहलाती है । इस प्रकार संविधान की अष्टम अनुसूची में शामिल 22 सभी भारतीय भाषाएं राष्ट्रभाषाएं हैं ।

प्रश्न 6. प्रवीणता प्राप्त कर्मचारी किसे कहा जाता है ?

उत्तर ऐसे कर्मचारी को हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर्मचारी माना जाता है जिसने-

क. मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिंदी माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है, या

ख. स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिंदी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया था, या

ग. यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है।

हिन्दी भाषाओं की भाषा है, हर हिन्दुस्तानी की आशा है।

प्रश्न 7. राजभाषा और राष्ट्रभाषा को स्पष्ट करते हुए दोनों में अंतर बताएं ?

उत्तर राजभाषा का सीधा-साधा अर्थ है - राजकाज अर्थात् शासन-प्रशासन अथवा सरकारी कामकाज की भाषा। संविधान सभा की स्वीकृति से 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी राजभाषा बनी। इस प्रकार से राजभाषा, एक संवैधानिक शब्द है, जिसकी परिभाषा इस प्रकार से दी जा सकती है-'सामान्य शासन-प्रशासन, न्याय-प्रक्रिया, संसद-विधान मंडल , एवं सरकारी कार्यालयों में प्रयोग हेतु संविधान द्वारा स्वीकृत भाषा एवं लिपि तथा भारतीय अंकों का रूप ही राजभाषा है।' राजभाषा के ही समांतर राष्ट्रभाषा शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। राजभाषा के स्वरूप को अच्छी तरह समझने के लिए यह जान लेना आवश्यक है कि राष्ट्रभाषा क्या है ?

राष्ट्रभाषा का अर्थ- एक राष्ट्र में समस्त राष्ट्रीय तत्वों को व्यक्त करने वाली भाषा जो राष्ट्र में भावनात्मक एकता कायम रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हो राष्ट्रभाषा है। भारत एक ऐसा बहुभाषा-भाषी राष्ट्र है, जहां समृद्ध संस्कृति की विशाल परंपरा है, जो यहां की विभिन्न भाषाओं के माध्यम से अभिव्यक्त होती है।इस प्रकार से इस राष्ट्र में अनेक भाषा, व्यवहृत होती हैं। इनमें से प्रमुख 22 भाषाओं को राष्ट्रीय स्वीकृति मिली है तथा उन्हें संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया है।इनमें हिंदी ही एक मात्र ऐसी भाषा है, जो लिखने, पढ़ने, बोलने तथा समझने में अपेक्षाकृत सहज है तथा सभी भाषाओं के बीच संपर्क-सूत्र का काम करती है। प्रत्येक भारतवासी इसे समझता और थोड़े-बहुत परिवर्तनों के साथ बोलता है।

इस प्रकार से हिंदी का प्रयोग अखिल भारतीय स्तर पर सर्वस्वीकृत माध्यम के रूप में हो रहा है। हिंदी का यह राष्ट्रभाषा रूप है।राजभाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग संविधान के अनुसार नियम बनाकर हो रहा है, इसलिए सैद्धांतिक स्तर पर राजभाषा और राष्ट्रभाषा एक ही चीज नहीं है, उनमें पर्याप्त अंतर है। वर्तमान समय में हिंदी राष्ट्रभाषा के साथ-साथ संघ तथा 11 राज्यों की रषा है।

राजभषा और राष्ट्रभाषों अंतर-

1. राजभाषा ,क संवैधानिक शब्द है, जबकि राष्ट्रभाषा स्वाभाविक रूप से सृजित शब्द।इस प्रकार राजभाषा प्रशासन की भाषा है तथा राष्ट्रभाषा जनता की भाषा।
2. समस्त राष्ट्रीय तत्वों की अभिव्यक्ति राष्ट्रभाषा में होती है, जबकि केवल प्रशासनिक अभिव्यक्ति राजभाष में होती है।
3. राजभाषा की शब्दावली सीमित है, जबकि राष्ट्रभाषा की शब्दावली विस्तृत।
4. राजभाषा, नियमों से बंधी होती है, जबकि राष्ट्रभाषा स्वतंया मुक्त प्रकृति की होती है।
5. राजभाषा में शब्दों का प्रवेश, निर्माण अथवा अनुकूलन (विशेषकर तकनीकी प्रकृति के शब्दों का) विद्वानों एवं विशेषज्ञों की समिति की राय से किया जाता है, जबकि राष्ट्रभाषा में शब्द समाज से आते हैं तथा प्रचलन के आधार पर रूढ़ होकर मान्यता प्राप्त करते है।इसके निर्माण में सभी का हाथ होता है।
6. राजभाषा, हिंदी भाषा का प्रयोजन मूलक रूप है इसलिए तकनीकी सृजन है।जबकि राष्ट्रभाषा, हिंदी भाषा का स्वाभाविक तथा पारंपरिक रूप है।
7. राजभाषा के प्रयोग का क्षेत्र सीमित होता है, जबकि राष्ट्रभाषा का क्षेत्र इतना व्यापक कि उसका व्यवहार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी होता है।
8. राजभाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग उत्तरोत्तर अंग्रेजी की जगह पर हो रहा है जबकि राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग स्वाभाविक स्वरूप से देश-विदेश सर्वत्र हो रहा है।

उन्नति का द्वार है हिंदी, हम लोगों का प्यार है हिंदी।

भारत की स्वास्थ्य सेवाओं की चिंताजनक स्थिति

हीरा लाल
सहायक

भारत की स्वास्थ्य चिंताएँ :-

1. भारत आज भी संक्रामक रोगो का पंसदीदा स्थल तो है ही, साथ में गैर-संक्रामक रोगो से ग्रस्त लोगो की संख्या में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। प्रत्येक वर्ष लगभग 6 प्रतिशत भारतीय हृदय, कैंसर एवं फेफड़े संबंधी बीमारियों के कारण अपनी जान गवा देते है। प्रत्येक चार में से एक भारतीय हृदय संबंधी रोगों के कारण 65 से 70 वर्ष की आयु तक पहुँचने से पहले ही मर जाते है।
2. स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता में विषमता का मुद्दा भी काफी चिंताजनक है। शहरी क्षेत्रों के मुकाबले ग्रामीण क्षेत्रों की स्थिति काफी बद्तर है। इसके अलावा निजी अस्पतालों के मुकाबले सरकारी अस्पतालों में सुविधाओं का घनघोर अभाव है। निजी अस्पतालों की वजह से बड़े शहरों की स्वास्थ्य सेवा संतोषजनक है। परंतु चिंताजनक पहलू यह है कि निजी अस्पतालों में केवल सम्पन्न तबके के लोगों ही पहुँच है।
3. तीव्र शहरीकरण के कारण शहरी निर्धन आबादी और विशेषकर झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वालों कि संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है। आबादी का यह हिस्सा सरकारी एवं निजी अस्पतालों के समीप रहने के बावजूद स्वास्थ्य सुविधाओं को पर्याप्त रूप में नहीं प्राप्त कर पाता है। सरकारी घोषणाओ में तो राष्ट्रीय कार्यक्रमों के तहत सभी स्वास्थ्य सेवाएँ सभी नागरिक के लिए निरूशुल्क उपलब्ध है और इन सेवाओं का विस्तार भी काफी व्यापक है। परंतु जमीनी सच्चाई यही है कि सरकारी स्वास्थ्य सुविधा आवश्यकताओं के विभिन्न आयामों को संबोधित करने में विफल रही है।
4. मंहगी होती चिकित्सा सेवा सुविधाओं के कारण, आम नागरिक द्वारा स्वास्थ्य पर किए जाने वाले खर्च में बेतहासा वृद्धि हुई है। एक अध्ययन के आधार पर आकलन किया गया है कि केवल इलाज पर खर्च के कारण ही प्रतिवर्ष करोड़ों की संख्या में लोग निर्धनता का शिकार हो रहे है। ऐसा इसलिये हो रहा क्योंकि कि समाज के जिस तबके को इन सेवाओं कि आवश्यकता है, उसके लिए सरकार की तरफ से वित्तीय सरक्षण उपलब्ध नहीं है और उपलब्ध भी है तो उसकी पहुँच से बाहर है।
5. चूंकि भारत दुनिया की दूसरी सबसे आबादी वाला देश है और इसकी वजह से स्वास्थ्य सेवा आम आदमी तक पहुंचा पाना अत्यधिक मुश्किल है। मृत्यु दर घटी है, लेकिन जन्म दर दुनियाँ के ज्यादातर देशो से अधिक है। जन्म दर और मृत्यु दर के संबंध में आदर्श स्थिति यही है कि दोनों में कमी आनी चाहिए।

निष्कर्ष :-

- हमें बचपन से ही सिखाया जाता है कि स्वस्थ जीवन ही सफलता की कुंजी है। किसी भी व्यक्ति को अगर जीवन में सफल होना है तो इसके लिये सबसे पहले उसके शरीर का स्वस्थ होना आवश्यक है।
- किसी देश के नागरिक जितने स्वस्थ होंगे देश विकास सूचकांक की कसौटियों पर उतना ही अच्छा प्रदर्शन करेगा। उदारीकरण के बाद आर्थिक क्षेत्र में हमारी महत्वाकांक्षाएँ आसमान छू रही हैं। भारत दुनिया की सबसे तेजी से उभरती हुई अर्थव्यवस्था है। लेकिन, जब बात देश में स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति की आती है तो हमारा सारा उत्साह ठंडा पड़ जाता है।
- बीमारियों की रोकथाम और उपचार के लिये आज हमारे पास जिस स्तर की सुविधाएं, संसाधन एवं तकनीक उपलब्ध हैं उन्हें देखते हुए देश में व्याप्त असमय मृत्यु, अनावश्यक बीमारियाँ और अस्वस्थ परिस्थितियों को एक विडंबना

कहना ही ठीक होगा। अत: हमें अपनी प्रौद्योगिकियों और ज्ञान के भंडार का भरपूर उपयोग करना चाहिये।

- बहुत से आँकड़े यह दिखाते हैं कि भारत में लोग बीमारियों को लेकर उतने सजग नहीं रहते किन्तु बीमार पड़ने के बाद कहीं ज्यादा खर्च कर डालते हैं। अत: हमें अपनी नीतियों में इस बात का समावेशन करना होगा कि हमारा खर्च रोगों के इलाज में कम रहे जबकि रोगों के रोकथाम में अधिक।

संदर्भ :- हमारे देश में आज भी स्वास्थ्य सेवा अत्यधिक महंगी है जो गरीबों की पहुँच से दूर है। स्वास्थ्य, शिक्षा एवं आवास मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं में से है। हमारे संविधान में इस बात का प्रावधान होते हुए भी कि आम आदमी को शिक्षा एवं स्वास्थ्य प्रदान करना हमारी प्राथमिकता है, परंतु हम एक राष्ट्र के रूप इस लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल रहें।

''एक निरोगी और स्वस्थ व्यक्ति ही दुनियाँ में सबसे ज्यादा अमीर होता है''

स्वरचित

भ्रम

सी.पी.आर्य.
वरिष्ठ लिपिक

चला था प्रकृति को वश में करने
चला था उन्मुक्त पक्षियों की उड़ान रोकने
चला था सब कुछ पाने
स्वछंद इंसान को जंजीर में जकड़ दिया।
सब कुछ संभव कहने वाले
इंसान को घुटनों पर लाकर रख दिया।
नभ को चूमने की तमन्ना रखने वाले
इंसान को धरती पर पटक दिया।
चलेगा पूरा विश्व मेरे इशारों पर
इंसान के अहंकार को चूर कर दिया।
रोक लेगा हर आती आपदा को
एक कोरोना ने इस भ्रम को भी तोड़ दिया।

स्वरचित

वितिय प्रबन्धन सुखमय जीवन

रवि परिहार
वरिष्ठ लिपिक

आजकल हर कोई पैसा कमाना चाहता है पैसे कैसे कमाने है यह हर कोई बताता है लेकिन पैसे की बचत करना यह कोई नहीं सिखाता है। अमीर से अमीर आदमी भी अगर बचत नहीं करेगा तो एक दिन वह भी गरीब हो जाएगा। मध्यम वर्ग के लोगों को लगता है उनके इतने सारे खर्चे है तो वह कैसे अपने वेतन से कुछ बचा सकते है इस वितिय समस्या से बहार निकलता बहुत मुश्किल है बचत आपके वितिय सुरक्षा के लिए बहुत जरूरी है।

''किसी ने सही कहां है कि पैसा एक ही भाषा बोलता है कि अगर तुमने मुझे आज बचा लिया, तो आगे चलकर मैं तुम्हें बचा लुंगा।''

बचत के बिना आपकी जिन्दगी बहुत बडे खतरे में पड़ सकती है इसलिए इस तरीके की समस्या से बहार निकलने के लिए तरीके ढुंढने चाहिए पैसे किस तरीके से बचाया जाए व किस तरीके से खर्च किया जाए? यह हमें स्कुल / कॉलेज में नहीं पढ़ाया जाता है शायद इसलिए ही अमीर लोग बहुत अमीर होते जा रहे है तथा गरीब लोग बहुत गरीब होते जा रहे है और मध्यम वर्ग के लोग तो ऋण की किस्त ही चुकाने में जिन्दगी गुजर जाती है।

''आज मेहनत कमाई से ज्यादा करो, किसी दिन कमाई मेहनत से ज्यादा होगी।''

अब मैं आपको पैसे बचाने के तरीके बताता हुँ अगर आप नौकरी करते है तो आप अपने - अपने वेतन से पैसे बचाने में जरा भी सफल नहीं हो रहे है अगर आपकी भी यहीं समस्या है तो मैं कुछ तरीके बताता हुँ, जिनके माध्यम से आपके वेतन से पैसे बचाए जा सकते है यहां मैं आपको पहले ही स्पष्ट रूप से बता देता हूँ कि पहली बार में आपको मेरे बताए हुए तरीके अजीब लग सकते है लेकिन आप इन तरीको को अपनाकर बचत करेंगे तो निश्चित ही आप अपने अगले वेतन का इंतजार नहीं करोगे।

सबसे पहले आपको अपने खर्चो के बारे में पता होना चाहिए। आप अपने खर्चो का विश्लेषण कुछ इस तरीके से कर सकते है माह के शुरूआत से लेकर माह के समाप्त होने तक आप अपना दैनिक खर्च एक डायरी अथवा आजकल स्मार्टफोन में अनेक एप्प है उसमें लिख सकते है जिससे आपको अपने खर्चो की श्रेणी का पता लगा सकते हैं कि कौनसा खर्चा किस श्रेणी में कितना क्या खर्च हो रहा है।

''यदि आप उन चीज़ो को खरीदते है जिनकी आपको जरूरत नहीं है, तो जल्द ही आपको अपनी जरूरत की चीजे बेचनी पड़ेगी।''

जब भी हमें वेतन मिलता है तो हमे अपने वेतन को 50:20:30 अनुपात में बाट देना चाहिए जहां आपके वेतन का 50% हिस्सा ''आवश्यकता'' शेष 20% हिस्सा आपके जरूरत की चीजे व शेष 30% हिस्सा आपकी बचत होगी।

50% राशि आप अपने आवश्यकता में खर्च कीजिए आवश्यकता से आश्य है कि जो आपके रोजमर्रा के खर्चे है जिसके बिना आप जिवित नहीं रह सकते है जो आपको चाहिए ही चाहिए जैसे किराणे का समान, परिवहन खर्च, घर का किराया, उपयोगिता बिल आदि। याद रखे यह सभी खर्चे मिलाकर इनकी राशि आपके वेतन से 50% से अधिक नहीं होनी चाहिए।

शेष 20% राशि आपकी जरूरते / इच्छाओं में खर्च करे। इंसान की जरूरते / इच्छाए भी होती है यहां मैं आपको कजुंस बनने को भी नहीं कह रहा हूं, आप अपनी वेतन से 20% की राशि खर्च कर सकते है, जैसे - शॉपिंग, रेस्ट्रोरेन्ट आदि।

हर भाषा की इज्जत करो, पर हिंदी को न बेइज्जत करो।

याद रखे कि आप अपने इच्छा के बिना भी जिन्दगी गुजार सकते है या फिर जैसे आपको एक मोबाइल लेना है तो और वह मोबाइल की राशि आपके वेतन से 20% राशि से ज्यादा है तो उसको आप नजर अंदाज करो या फिर जब आपके पास मोबाइल की राशि जितना बचत कर लेते हो। उस दिन मोबाइल को खरीद सकते हो।

अपने जरूरत के खर्च को कभी *EMI/Loan* पर नहीं लेना चाहिए।

जैसे आप ब्राडेंड कपडे पहनते हो शॉपिंग करते हो, आइफोन खरीदते हो, आप अपनी इच्छाओं के लिए काफी कुछ खर्च कर देते हो तो आपको समझना चाहिए आपकी जिन्दगी शॉपिंग/आइफोन के बिना भी जिन्दगी चल सकती है, लेकिन समस्या तब होती है जब लोग आवश्यकता व जरूरत पर खर्चे का अंतर नहीं समझ पाते है इसका साधारण सा उदाहरण है आप अपने आप से तीन बार पुछो क्या यह खरीदना जरूरी है या नहीं अगर जवाब हां है तो वह आपकी आवश्यकता है और जवाब ना है तो जरूरत/इच्छा है। इसको एक और उदाहरण से समझते है कि अगर आप अपने कार्यालय में जुते पहनकर जाते हो और वह जुते फट गए है तो आप उसको आवश्यकता की श्रेणी में रख सकते हो क्योंकि आप उसको वहां पहन कर जाते हो जहां आपको वेतन मिलता है।

आप खर्चे करने से पूर्व आप अपने वेतन को (1) एक घण्टा या (01) एक मिनट में बदल दो जैसे आप 43200/- प्रतिमाह कमाते हो तो 1 दिन में आप 1440/- व 1 घण्टा में 60/- व 1 मिनट में 1/- कमाते हो अब आप खर्चा करने से पूर्व उसको खर्च करने में आपको कितने मिनट/घण्टा काम करना पडेगा। यह गणना करने के बाद अगर आप उस चीज को खर्च वहन कर सकते हो तो खरीद सकते हो।

अब शेष 30% राशि आपके अलग बचत खाते में होनी चाहिए जिसमें 50% नकद होना चाहिए शेष 50% राशि को आप इनवेस्ट करिए ताकि वो आपको लंबे समय बाद अच्छा लाभ मिले।

''इंसान कभी भी अपनी कमाई से गरीब नहीं होता, बल्कि इंसान तो अपनी जरूरतो के हिसाब से गरीब होता है।''

शुरूआत में अगर आप 50:20:30 को अपनाने में मुश्किल होती है तो आप 60:20:20 कर सकते है, जहां 60% आवश्यकता पर खर्च, 20% जरूरत पर खर्च, 20% बचत होनी चाहिए।

अब जब आप सफलतापूर्वक 50:20:30 या 60:20:20 को अपना लो तो बाद में आप अपने आवश्यकता खर्च को 40-50% पर व जरूरत के खर्चे को 10-20% व शेष बचत होनी चाहिए।

हमने बचत के साथ - साथ खर्चो पर भी विश्लेषण किया है क्योंकि आजकल सभी फिजुल खर्च ज्यादा करते है इसीलिए कोई भी बचत नहीं कर पाता आप अपनी जिन्दगी में यह नियम अपनाओगे तो विश्वास के साथ कहता हूं कि आप अपना बैंक बैलेंस हमेशा अच्छा देखोगे।

स्वरचित

देश - दुनिया तक हिंदी पहुँचाओ, पूरी दुनिया में पहचान बनाओं।

वृक्ष की आत्मकथा

राजेश सोनी
सहायक

मैं, वृक्ष का जन्म मुझे ज्ञात नहीं परंतु जब मैं पैदा हुआ था, उस समय मेरे आस-पास बहुत सारे साथी वृक्षों ने मेरे पैदा होने, मानव व जानवरों को अपने खुशी का इजहार करते हुए झूमते हवाओं के साथ हर्ष ध्वनि से, इस धरती पर खूब सारें फूल-फल गिराए, कि वे भी इस उत्सव में सहभागी रहे। उस समय एक भिक्षु ने मेरे बगल के वृक्ष में ज्ञान प्राप्त किया, जो आगे चलकर गौतम बुद्ध बने और संसार में शांति व मानवता का पाठ पढ़ाया।

मैं, वृक्ष झूमता - गाता हुआ कब बड़ा हुआ , मुझे मालूम नहीं। जब मैं युवावस्था में पहुंचा, तब मैंने धीरे-धीरे मेरे पड़ोसी वृक्षों का पलायान देखना शुरू किया, परंतु कारण समझ में नहीं आया, जब तक समझा तब मेरी उम्र पचास के आस- पास हो गई, तब जानने लगा कि मेरे भी पैर अब उखड़ने की कगार पर है, जमीन की नमी की कमी मुझे अखरने लगी, विभिन्न प्रकार के प्रदूषण बढ़ने लगे, जिसे मनुष्य अपनी सुख-सुविधाओं को बढ़ा रहा है, परंतु यह देखने में असमर्थ होने लगा है कि उसके पास अपने परिवार की जिम्मेदारियों के साथ - साथ इस सृष्टि को भी साथ में लेना है। मैं , वृक्ष जो पहले खूब अपने सुंदरता बिखेरता था, आज के प्रदूषण में न ही मेरी सुंदरता खराब हो गयी, साथ-साथ मेरी सहनशक्तिभी खत्म होती जा रही है।

न जाने मनुष्य कब जागेगा, अपने इस यथार्थ परिस्थिति को समझेगा और उसमे सुधार के लिए मेरे साथ कदम से कदम बढ़ाएगा। यह भी जानते हुए कि मेरे बिना न ही पानी और न ही स्वच्छ हवा रहेगी।

आज मेरी उम्र लगभग, 60 साल हो गयी है, मुझे मेरे आस पास कोई साथी नजर नहीं आ रहा है। मेरे मन में कौतूहल होने लगा है कि जो मेरे पूर्वज की उम्र 100 साल से ज्यादा होती थी, वह आज अपने युवावस्था से पहले ही दम तोड़ रही है।

इसके लिए मैं मानव को ही जिम्मेदार नहीं मानता हु , परंतु मैं भी कुछ हद तक जिम्मेदार हूँ क्योंकि मैंने मानव को एहसास कराने में देर कर दी।

लेकिन एक कहावत है कि जब जागो तभी सवेरा !

इस पर अमल करते हुए मैं अब मानव को एहसास दिलाने लगा हूँ कि इस गर्मी, सूखा, बाढ़ से निपटने के कितने भी ज्ञान की इंजीन्यरिंग कर ले , परंतु मेरे बिना आपका अस्तित्व नहीं रहेगा।

खैर देर से ही सही, जब अपने पर आता है तभी समझ आता है। मानव को एहसास होने लगा है और अब धीरे ही सही, पेड़-पौधे लगाने लगा है।

आओ मैं और तुम एक दूसरे के पूरक बने और इस धरती को स्वच्छऔर हरा-भरा बनाए।

स्वरचित

जो नहीं करते राष्ट्रभाषा का सम्मान, हमेशा होता है उनका अपमान।

क्षणिकाएँ

राजेश मुथा
कार्या. अधी.
(सेवानिवृत्त)

दहशतों के सायों से दरकती
घर की दीवारें डराती है मुझे
फिक्र यह नहीं कि मै दबकर खंडहर हो जाऊँ
फिक्र ये है कि बे इम्यिाज लोग
मसला ना खड़ा करले
मुझे छोड़ तुम्हें जमीदोज ना कर दे
वे इम्तियाज का अर्थ विवेकहीन, बुद्धिहीन

राहे अभी बहुत सी है
रास्ते अभी बहुत से है।
मैं सबके बारे में कह देता हूं।।
तुम सोचते हो, जो तुम बोलते हो
मैं सब कह देता हूं।
फिर टोकते हो मुझको,
तुम टोकते हो मुझको,
तुम रोकते हो मुझको
मै उनके बारे में कह देता हू।
तुम छुपाते हो जिसको, तुम बचाते हो किसको
मै उनके बारे में कह देता हूं।
जिन राहे पर तुमने रखे कदम,
रोक सको तो रोक लो
फिर, फिर ना कहना
मै वो सब कह देता हूं।

मेरी आदत है मै,
बिखरे पडे पन्नो को समेट लेता हूँ,
बेकार कागजो को फाड कूडे दान में फेक देता हूँ।
फिर करीने सब कर,
अपने आपको व्यवस्थित कर लेता हूँ।
बहुत पहले तेज हवाए आई थी
लगा था, सब कुछ बिखर गया है, सोचा

आजादी का अहसास कराती, हिंदी हमें आजादी दिलाती।

तार तार पन्नो को
फिर से कैसे जोड़ू,
लेकिन
मेरी आदत है मै समेट लेता हूँ।
कल तो तुफान ही भीतर घुस आया था
सब कुछ, तहस नहस कर गया
उडा ले गया मीठी यादो के सुनहरे पन्ने,
वो विश्वास से उकेरी तस्वीरे,
वो प्यार से लिखी ईबादते,
वो सुनहरी यादो की तस्वीरे,
छोड गया तुडे मुडे पन्ने,
खंड खंड पडी उकेरी यादे,
लेकिन क्या करू
मै उन पुरानी यादो को फिर से
नये पन्नों में उकेर लेता हूँ।
जोड लेता हूँ फटे पन्नो के टुकडो को,
फिर से लिखता हूँ
सुनहरे सपनो को, बीते पलो को,
क्योकि
मेरी आदत है मै
बिखरे पन्नों
को फिर से समेट लेता हूँ।
पत्थरों का शहर है हमारा जनाब
मगर दिल हम मोम सा रखते है
आँधियाँ कितनी जोर से चले
मगर छप्पर हम पड़ोसी का भी सँभाल कर रखते हैं
वे कौन है कौन है वे
जो फैला रहा है अंधेरा चारों ओर
कह दो उनसे
हम तो अपना सूरज भी अपने आसमाँ में रखते है
बारिशों में टूटे नालों से

निकल आता है गंदा पानी मगर

हिंदी मेरी आन है, हिंदी में मेरे प्राण है।

प्लट के पानी को बहा ले जाती हैं गंदगी सारी
हम अपने शहर में ऐसे तालाब रखते है

वह चुप है, मगर खूब बोलता है
यकीन नहीं है
मगर बेहिसाब बोलता हैं
किस किस से कहू
वो क्या क्या बोलता है
मुझसे दूर रहकर भी
उसकी आवाज मुझे सुनाई देती है
खामोश आसमाँ में तैरती उसकी
निगाहों का जादू बोलता है
पागल कर दिया कम्बख्त ने
हर कदम वो कदम बोलता हैं

कभी कहीं कोई आसमाँ में भी नजर आता होगा
नजर उठा के देख सपनों का शहर उड़कर तेरे पास आता होगा
गहरे काले बादलों को चीरकर वो उम्मीदों का पंख फैलाए रोशनी का कतरा तेरे पास आता होगा
शाम अभी ढली नहीं है वो सूरज कल की उम्मीद देने तेरे पास आता होगा
उठ खड़ा हो, फैला दें बाँहें वो पूनम का चाँद भी तुम्हें ठंडक देने आता होगा

स्वरचित

सच्चा शिष्य कौन

पंडित राम नारायण अपने समय के विद्वानों में से सबसे अधिक विद्वान और पूजनीय तथा सम्माननीय भी माने जाते थे।

कंचनपुर के बाहर ही जंगल में उन्होंने अपना आश्रम बनाया हुआ था। जिसमें दूर-दूर से विद्यार्थी पढ़ने आते थे। पंडित जी के आश्रम में किसी प्रकार का भेदभाव या ऊंच-नीच नही बरती जाती थी। चाहे राजा का बेटा हो या रंक, सभी को सम्मान रूप से शिक्षा -दीक्षा दी जाती थी।

पंडित जी के एक ही पुत्री थी जो तेजी से युवावस्था की ओर बढ़ रही थी। पंडित जी चाहते थे कि जल्दी से जल्दी योग्य वर ढूंढ कर उसकी शादी कर दें और इस कर्ज से मुक्त हों।

उनकी बेटी थी बड़ी सुशील और बुद्धिमान।

पंडित जी ऐसा ही नेक और बुद्धिमान युवक उसके लिए ढूँढना चाहते थे।

एक पंडित रामनारायण के मन में विचार आया कि क्यों न मैं अपने सभी शिष्यों की परीक्षा लूँ? इन सबमें जो भी सबसे अधिक बुद्धिमान होगा, उसी से मैं अपनी बेटी की शादी करूंगा।

दूसरे दिन पंडित जी ने अपने सभी शिष्यों को बुलाकर कहा, ''देखो बच्चों ! मैं एक बहुत ही विकट स्थिति में फंस गया हूँ।''

''कैसी विकट स्थिति गुरूजी !'' भीमसेन नामक युवक ने पूछा।

'' बात दरअसल यह है कि मेरी बेटी विवाह योग्य हो गई है और आज तक उसकी शादी के लिए मैने कुछ भी बचाकर नही रखा-

अब शीघ्र ही मुझे उसकी शादी करनी हैं। जिसके लिए वस्त्र और आभूषण चाहिए।''

'' इसमें चिंता की क्या बात है गुरूजी ।'' एक सुंदर सा युवक अपने स्थान से उठकर बोला - '' मेरे पिता नगर सेठ है - आपके आदेश पर मैं हमारी स्वर्ण मुद्राएं आपके चरणों में लाकर डाल सकता हूँ।

'' नही - नही गुरूजी - आप मुझे आदेश दे - मैं इस राज्य का युवराज हूँ - आपके एक इशारे पर मै आपके कदमों में हीरे-मोती, सोने-चांदी के ढेर लगा दूंगा।

इसी प्रकार बहुत से युवको ने अपनी सामर्थ्य के अनुसार धन देने की पेशकश की।

किन्तु पंडित जी ने किसी प्रस्ताव को स्वीकार नही किया और बोले - '' नहीं-नहीं, इस प्रकार तो मेरा सारा मान - सम्मान धूल में मिल जाएगा - लोग कहेंगे कि पंडित रामनारायण ने भिक्षा लेकर बेटी के हाथ पीले किए है।''

'' फिर आप ही कोई रास्ता सुझाइए गुरूजी - इस समस्या का समाधान कैसे हो ? '' युवराज वीरसिंह ने कहा।

'' देखो शिष्यों ! हमें कोई ऐसा रास्ता तलाशना है कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे - तुम भी थोड़ा-थोड़ा सामान जहाँ-तहाँ से चोरी करके लाओ - मगर एक बात का ध्यान रहे कि इस चोरी का किसी को पता नहीं चलना चाहिए - अगर दाएं हाथ से चोरी करों तो बाए हाथ को पता न चले कि क्या चुराया गया है। यह चोरी एकदम गुप्त होनी चाहिए - इस प्रकार तुम्हारे गुरू की लाज बच सकती हैं।''

''आप चिंता न करें गुरूदेव।'' सभी शिष्यों ने एक साथ कहा - ''ऐसा ही होगा।''

और फिर गुरुजी की आज्ञा का पालन करने के लिए सभी शिष्य अलग-अलग दिशाओं में बढ़ गए।

जो भी शिष्य कोई वस्त्र या आभूषण चुराकर लाता, उसे चुपचाप गुरुजी को दे देता । कुछ ही दिनों में गुरुजी के पास ढेरों

चीजें एकत्रित हो गई।

हर शिष्य द्वारा चुराकर ली गई वस्तु गुरुजी अलग-अलग रख रहे थे।

कुछ दिन गुजर जाने के बाद गुरुजी ने देखा कि लगभग सभी शिष्य कोई-न-कोई चीज चुराकर लाए हैं, लेकिन भीमसेन नामक युवक आज तक कोई चीज चुराकर नहीं लाया। इसका कारण जानने की उत्सुकता को वे दबा नहीं पाए।

अतः एक दिन उन्होंने सभी शिष्यों को एकत्रित किया और बोले- ''हमारे हर शिष्य ने अपनी सामर्थ्य के अनुसार चोरी करके हमें कुछ-न-कुछ लाकर दिया है, मगर भीमसेन! इतने दिन गुजर जाने के बाद भी तुम कोई वस्तु चुराकर नहीं ला पाए- क्या तुम नहीं चाहते हो कि तुम्हारे गुरुजी की चिंता दूर हो?''

''चाहता हूँ गुरूदेव - हृदय से चाहता हूँ।''

''फिर तुम कोई चीज चुराकर क्यों नहीं लाए ?''

''कैसे चुराकर लाता गुरुदेव - आपकी आज्ञा ही कुछ ऐसी थी जिसने मुझे बार - बार चोरी करने से रोका।

'' क्या मतलब ?'' पंडित रामनारायण पैनी नजरों से उसकी ओर देखने लगे।

अन्य शिष्य भी चौंककर उसकी और देखने लगे कि गुरुजी ने स्वयं चोरी करके लाने को कहा था, फिर यह किस आज्ञा की बात कर रहा है ?

''गुरुजी।'' भीमसेन ने कहा - ''आपने ही तो कहा था चोरी करके लानी है, लेकिन इस चोरी का किसी को पता न चले। यहाँ तक कि दायाँ हाथ चोरी करे तो बाएं हाथ को भी पता न चले।''

''हाँ कहां था - मगर इसमें क्या परेशानी थी ?''

''गुरुदेव! आपने ही तो हमें यह सबक सिखाया है कि हमारी आत्मा सब कुछ देखती है - फिर मैं अपनी आत्मा से इस चोरी को गुप्त कैसे रख सकता था - बस यही कारण है कि मैं आज तक कुछ भी चुराकर नहीं ला सका।''

''धन्य हो, तुम धन्य हो बेटे।'' पंडित रामनारायण ने शाबाशी से उसकी पीठ ठोककर सभी छात्रों के सामने उसे सीने से लगा लिया और बोले - ''तुम मेरे सच्चे शिष्य हो।''

फिर अन्य शिष्यों को संबोधित होकर बोले - ''देखो! मुझे इस बात की खुशी है कि तुम सब मेरे आज्ञाकारी शिष्य हो और तुम सभी ने मेरी आज्ञा का पालन किया- मगर मेरे प्रिय शिष्यों, आज मैं तुम्हें एक शिक्षा और देता हूँ कि यदि माँ-बाप, भाई-बहन, यहाँ तक कि गुरु भी किसी गलत कार्य को करने के लिए कहे, तो भी जीवन में कोई गलत कार्य नहीं करना- तुम लोगों की बुद्धि परीक्षा और अपनी पुत्री के लिए योग्य वर ढूँढने के लिए ही मैंने यह सब नाटक किया था - भीमसेन को मैं अपनी पुत्री के योग्य वर मानता हूँ - आशा है, इस पाठ से तुम सभी ने एक नया सबक सीखा होगा - जाओ, अब जो-जो वस्तु तुम जहां-जहां से चोरी करके लाए हो क्षमा मांगकर ये सभी वस्तुएं वापस कर आओ।''

''गुरुदेव! हम मानते हैं कि भाई भीमसेन हम सबसे योग्य हैं - हम इसे गुरु जामाता के रूप में स्वीकार करते हैं।'' सभी शिष्यों ने एक स्वर में कहा और भीमसेन को कंधों पर उठाकर खुशी से नाचने-गाने लगे।

इस प्रकार गुरु की आज्ञा का पालन न करने के बाद भी भीमसेन ने ही उनकी पुत्री का वरण किया, क्योंकि उसने गुरु आज्ञा का पालन मन से किया था और अपने मन की ही बात सुनी भी। यही कारण था कि वह कुछ भी चुराकर न लाया, उसकी अंतरात्मा उसके लिए गवाही नहीं देती थी।

भव्य भोजवानी

संकलन - जातक कथाएं

पुत्र श्री गिरीश भोजवानी (सहायक)

हम सब करे हिंदी में बात, अपनी मातृभाषा का देंगे साथ।

मानसिक शांति

रमेश राय
उप निदेशक

गीता के अनुसार, आत्मा का निवास स्थान इस साकार सृष्टि के पांचों तत्वों अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश तथा सूर्य, चाँद व सितारों के पार अखंड ज्योति महातत्व में है। जिस समय आत्माएं अपने मूल रूप में होती हैं, उस समय वे पवित्र तथा निर्विकारी होती हैं। परंतु शरीर धारण करने पर काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार में फंसने के कारण आत्म अशांत हो जाती है। कहते भी हैं – आत्म स्वयं ही अपनी मित्र है और स्वयं ही शत्रु भी। इसलिए हर व्यक्ति को यह देखना चाहिए की वह स्वयं ही अपना शत्रु तो नहीं। अर्थात् वह स्वयं के कारण ही तो अशांत नहीं? इसलिए मानसिक शांति के लिए सबसे पहले स्वयं को ही शांति बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। इसके पश्चात ही अन्य तत्वों पर विचार करना चाहिए।

मन की अंशांति के कारण तथा उनके उपाय –

1. शारीरिक रोग – शारीरिक रोग निश्चय ही मनुष्य को अशांत बना देते हैं। जितना समय मनुष्य रोगी रहता है, मन अशांत रहता है। यदि मनुष्य यह मानते है की शारीरिक रोग अपनी भूलों तथा पाप कर्मों का परिणाम है तो मनुष्य प्रतिदिन भूलें कम करेगा, सहनशीलता बढ़ जाती है तथा अशांति दूर होकर मनुष्य हर्षितमुख रह सकता है।

2. निर्धनता – कुछ लोग ऐसे हैं, जिनके पास जीवन निर्वाह के लिए पर्याप्त धन अथवा धनोपार्जन के साधन नही हैं, जिसके कारण वे बेचारे दुःखी तथा अशांत रहते हैं। निर्धनता को दूर करने के लिए उन्हें धनोपार्जन हेतु वैद्य तरीके अपनाने चाहिये व लगातार प्रयास करने चाहिए। इसके साथ धैर्य धारण करना चाहिए। धैर्य धारण करने से अभावों के होने पर भी अशांति की अनुभूति नहीं होगी तथा मन शांत रहेगा।

3. चिंताएं – चिंता भी एक प्रकार का मानसिक रोग है। प्रायः चिंता भी मोह या भय के कारण होती है तथा ये बातें बुद्धि से निकाले नहीं निकलती। परिणाम क्या होगा, वह जो भी हो उसकी चिंता करना भूल है। जो हम चाहते हैं सदैव वैसा ही हो यह असंभव है। अतः जो भी परिणाम हो उसे सहन करने की शक्ति अपने अंदर उत्पन्न करनी चाहिए, जिससे मन शांत होगा।

4. प्रतिकूल वातावरण, विपरीत परिस्थितियां, विघ्न तथा दुर्घटनाएं – आजकल मनुष्य के जीवन में उतार-चढ़ाव बहुत आते हैं। संसार में जो भी सुख-शांति के साधन समझे जाते हैं उनमे भी दुःख और अशांति समाई है। मनुष्यों का परस्पर स्वभाव न मिलना अशांति का कारण है। जैसे पड़ोसी, नौकर, पति, पत्नी, पुत्र-पुत्री घर मे अशांति का कारण हो सकते हैं। हर कोई प्रतिकूल वातावरण तथा परिस्थितियों से घिरा हुआ है। वर्तमान युग मे शांति को धारण करना असंभव तो नहीं कठिन अवश्य है। इस अशांत वातावरण मे मनुष्य को यह समझना चाहिए की वह जीवन मे एक सृष्टि रूपी मंच पर हो रहे नाटक का एक पार्टधारी, अभिनेता तथा दर्शक है। जो भगवान ने उसे पार्ट दिया है वह उसे निभा रहा है। क्योंकि नाटक मे पार्टधारियों को किसी बात मे शोक नहीं होता है। क्योकि बुद्धि मे रहता है की यह नाटक है वैसे ही जीवन को एक नाटक समझकर उपराम रहने से कभी अशांति का अनुभव नहीं को सकता है।

5. मानसिक विकार – कौन नहीं जनता की काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष आदि मानसिक विकारों के कारण ही मन अशांत होता है। परंतु इन विकारों से बचने का कोई सहज उपाय होना चाहिए। प्रायः जब मनुष्य तीर्थ-यात्रा पर जाते हैं, वे जितने दिन यात्रा पर रहते हैं, खान-पान, रहन-सहन आदि में वे हर प्रकार से विशुद्ध वातावरण बनाकर रखते हैं जिससे बुरे संस्कार दब जाते हैं तथा शुद्ध संस्कार जागृत हो जाते हैं। ठीक उसी प्रकार मनुष्य यदि स्वयं को जीवनमुक्त का यात्री निश्चय कर ले तो जीवन भर मानसिक विकार कभी समीप न आयें और जीवन मे भी पवित्रता का वास रहे। अतः

सभी भाषाओं का सार है, हिंदी को सबसे प्यार है।

अपवित्रता को पवित्रता मे बदलने से ही मन को स्थायी शांति मिल सकती है।

6. सच्ची शांति की प्राप्ति के मुख्य साधन –

(i) अपने आपको एक साक्षी–दृष्टा समझकर कर्तव्य परायण रहना।

(ii) बीति बातों को स्वप्न की भाँति भुला देना।

(iii) अशांत वातावरण का यथा संभव त्याग करना।

(iv) सहनशीलता का गुण धारण करना।

(v) स्वयं के मानसिक विकारों का त्याग करना।

(vi) बुरा संग अथवा कुसंग का त्याग करना।

स्वरचित

विवेक शील

कमल कुमार मीणा
सा.सु.अ.

दो भाई समुद्र किनारे टहल रहे थे। दोनो में किसी बात को लेकर बहस होने लगी। इस दौरान अचानक बड़े भाई ने छोटे भाई को थप्पड़ मार दिया। छोटे भाई ने बड़े भाई को कुछ नही कहा और रेत पर लिखा 'आज मेरे बड़े भाई ने मुझे थप्पड़ मारा'। अगले दिन दोनो फिर समुद्र के किनारे घूमने निकले और छोटा भाई समुद्र में तैरने, नहाने लगा। अचानक वह डूबने लगा। तभी बडा भाई तुरंत अपनी जान की परवाह किए बिना उसको बचाने समुद्र ने कूद गया और उसको बचा लिया। तब छोटे भाई ने पत्थर पर लिखा ''आज मेरे बड़े भाई ने मुझे जान जोखिम में डालकर बचाया'', तो बड़े भाई ने छोटे भाई से कहा कल जब मैंने थप्पड़ मारा तो तुमने रेत पे लिखा और आज पत्थर पे लिखा, ऐसा क्यों? विवेकशील छोटे भाई ने जवाब दिया जब हमें कोई दुख दे तो रेत पर लिखना चाहिए ताकि जल्दी मिट जाए, परंतु जब भी कोई हमारे लिए अच्छा करता है तो हमे पत्थर पर लिखना चाहिए जो मिट न पाए और हमेशा के लिए यादगार बन जाए।

स्वरचित

सकारात्मक सोच

धर्मेश गहलोत
वरिष्ठ लिपिक

मनुष्य में इतनी क्षमता होती है कि वह अपने सकारात्मक सोच और आत्मविश्वास के साथ हर छोटी से बड़ी समस्याओं को हल कर सकता है। खुद के आत्म विश्वास दृढ़ संकल्प और कड़ी मेहनत के साथ-साथ सफलता प्राप्त करने के लिए सकारात्मक सोच का होना बहुत ही आवश्यक है। हम जो कुछ भी सोचते हैं, उसे बड़ी ही आसानी से पूरा भी कर सकते हैं। अपनी उस सोच को पूरा करने के लिए हम अपना बेहतर से बेहतर प्रभाव देते हैं। यदि हमें किसी भी प्रकार की कोई समस्या होती है, तो हम अपना एक विशिष्ट प्रदर्शन देते हैं और कुछ करने की चाह के साथ उस काम को कर लेते हैं। यदि हम अपनी समस्याओं से दूर न भागकर उनसे डटकर मुकाबला करेंगे, तो हमारी जीत सकारात्मक रूप से पक्की हो जाएगी। सकारात्मक सोच एक ऐसा विश्वास होता है, कि वह अच्छी चीजों के साथ-साथ बुरी चीजों में भी आपके आत्मविश्वास को बढ़ाता है। सकारात्मक सोच किसी भी व्यक्ति की सफलता के पीछे विशेष योगदान दर्शाती है।

यदि सकारात्मक सोच और आत्मविश्वास का उपयोग सही मार्ग पर किया जाए तो दुनिया सबसे आगे निकल जाएगी। सकारात्मक सोच मानवीय शरीर की एक ऐसी शक्ति है, जो उस व्यक्ति को उसके मस्तिष्क के द्वारा उसके शरीर को कार्य करने के लिए प्रेरणा प्रदान करती है, जिसके कारण से व्यक्ति अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कड़ी मेहनत करने लगता है और बहुत जल्द ही सफल हो जाता है। ऐसा भी कहा जाता है कि जीवन कांटों भरा होता है और प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कठिन से कठिन परिस्थितियां आती रहती हैं और जो व्यक्ति अपने आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच की वजह से इससे निकल गया वह हमेशा खुश रहता है।

अच्छी सोच का मतलब है कि दूसरों के बारे में आपकी क्या मानसिकता है आप दूसरों की खुशी, दुःख किस प्रकार से देखते हैं। अच्छी सोच न केवल सोशल साइट्स पर शेयर करने से नहीं बल्कि अपनी मानसिकता रियल लाइफ में कैसी है ये महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अच्छी सोच को दूसरों के साथ शेयर करना भी एक अच्छी सोच और अच्छा इंसान बनने की खूबियां हैं। सकारात्मक सोच एक शक्ति, एक शस्त्र है, जो भगवान् ने हमें दिया है, इसका प्रयोग कर हम बड़े से बड़े युद्ध में विजय प्राप्त कर सकते है। जीवन में हमें कई तरह की परेशानियाँ आती है, ऐसा कोई नहीं है, जिसके जीवन में कोई कठिनाई, परेशानी न हो। हर इंसान के पास परेशानी है, लेकिन हर इंसान परेशान, रोता हुआ तो नहीं दिखता। परेशानी के समय भी जो अपनी सोच में काबू रखते है, वे ही उससे लड़कर आगे सफल हो पाते है। सकारात्मक सोच से हमारे शरीर में इच्छा शक्ति जागृत होती है और लोग कठिन से कठिन परिश्रम के द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं।

स्वरचित

हौंसला

राजेन्द्र कुमार मीणा
उपनिदेशक

सपनों की उड़ान धरती से ही भरनी होगी,
ये मेहनत आज नहीं तो कल करनी ही होगी।
रातों को सवेरा और सवेरे को रात बनाना ही होगा,
जहां पहुंचने की सोच रहे हो तुम उसका रास्ता खुद तुम्हें बनाना ही होगा।।
जो हो गया उसे सोचा नहीं करते, जो मिल गया उसे खोया नहीं करते।
हासिल नहीं होती है सफलता, जो वक्त और हालात पर रोया नहीं करते।

स्वरचित

विजय मिली पर विश्राम न समझो

दिनेश कुमार
कनिष्ठ लिपिक

ओ विपलव के थके साथियो
विजय मिली विश्राम न समझो
उदित प्रभात हुआ फिर भी छाई है उदासी
ऊपर मेघ भरे बैठे है, किंतु धरा प्यासी की प्यासी
जब तक सुख के स्वप्न अधुरे
पुरा अपना काम न समझो
विजय मिली विश्राम न समझो।।
पद लोलुपता और त्याग का एकाकार नहीं होने का
दो नावो पर पग धरने से सागर पार नहीं होने का
युगारम्भ के प्रथम चरण की
गतिविधि को परिणाम न समझो
विजय मिली विश्राम न समझो
तुमने व्रज प्रहार किया था पराधीनता की छाती पर
देखो आंच न आने पाए जन - जन की सौपी थाती पर
समर शेष है, सजग देश है
सचमुच युद्ध विराम न समझो
विजय मिली विश्राम न समझो।।

स्वरचित

मत लगाओ सिर्फ हिंदी दिवस का नारा, जीवन में उतारो और अपनाओ इसे सारा।

जोधपुर – मारवाड़ रो मोती

गणेश चौधरी
सहायक

राजस्थान की न्यायिक राजधानी जोधपुर की स्थापना 12 मई 1459 ई. में राव जोधा द्वारा की गई इससे पूर्व मारवाड़ राज्य की राजधानी मंडोर हुआ करती थी। वर्ष पर्यन्त चमकते सूर्य वाले मौसम के कारण इसे ''सूर्य नगरी'' व यहां स्थित मेहरानगढ़ दुर्ग को घेरे हुए हजारों नीले मकानों के कारण इसे ''नीली नगरी''के नाम से भी जाना जाता है ।

सन् 1544 ई. में गिरी–सुमेल का युद्ध शेरशाह व मालदेव के मध्य हुआ जिसका जिक्र तारिखे फरिश्ता में मिलता है कि शेरशाह ने विजयी होकर कहाँ था कि–''खुदा का शुक्र है कि किसी तरह फतह हासिल हो गई, वरना मैंने एक मुट्ठी भर बाजरे के लिए हिंदुस्तान की बादशाहत ही खोई थी।'' जोधपुर राज्य राजपूताना एजेंसी के तहत सबसे बड़ा राज्य था और जम्मू और कश्मीर राज्य और हैदराबाद राज्य के बाद ब्रिटिश भारत में तीसरा सबसे बड़ा राज्य था।

सन् 1730 में खेजड़ली नामक स्थान पर जोधपुर के महाराजा द्वारा हरे पेड़ों को काटने से बचाने के लिए, अमृता देवी ने अपनी तीन बेटियों के साथ पेड़ों से चिपककर अपने प्राण त्याग दिए। उसके साथ 363 से अधिक अन्य बिश्नोई, खेजड़ी के पेड़ों को बचाने के लिए मर गए। पर्यावरण प्रेम व वन्य जीवों के प्रति निःस्वार्थ प्रेम अभी भी जोधपुर में जीवंत है यहाँ काले हिरण के शिकार का मामला आज भी न्यायालय में पूँजीपतियों से लोहा ले रहा है।

सिर साटे, रूख रहे, तो भी सस्तो जांण

जोधपुर के लिए कहावत प्रसिद्ध है कि ''यहां के खंडे और खावण खंडे'' पूरी दुनिया में जाने जाते हैं। इसका तात्पर्य है कि यहां के छित्तर के पत्थर (खंडे) और यहां का खानपान हर किसी पर अपनी छाप छोड़े बिना नहीं रहते। यहां की मिठाइयां और नमकीन लोगों को दीवाना कर देती है। जोधपुरी साफा (पाग) और बंद गले का सूट यहां हर आयोजन में चार चांद लगाता है। पुरुष यहां कानों में बाली और लौंग पहनते हैं वहीं महिलायें सोने की आड, नथ और रखड़ी (बोरला) बाजूबंद को काफी पंसद करती हैं। यहां की मोजड़ी (जूतियां) की अपनी एक अलग खास पहचान है।

जोधपुर थार के रेगिस्तान के बीच अपने ढेरों शानदार महलों, दुर्गों और मन्दिरों वाला प्रसिद्ध पर्यटन स्थल भी है। कुछ मुख्य पर्यटन स्थल निम्नानुसार है।

मेहरानगढ़ दुर्ग

उम्मेद भवन पेलेस

जसवंत थड़ा

मंडोर दुर्ग

सन् पनरासों पनरोतड़े, जेठ मास में जाण !
सूद ग्यारस शनिवार रो, मंडियों गढ़ मेहराण।

संकलन – इंटरनेट द्वारा

हम सब को हिंदी है अपनानी, देश में एकता भाईचारा है बढानी।

अभिलाषा

श्रीमती शारदा जैन
माताजी अपूर्वा जैन
आशुलिपिक

माँ कैसे थे वो विपिन चन्द्र और कैसे थे वो सावर कर ?
कैसे थे वो चन्द्र शेखर, व कैसे थे वो राज गुरू ?
कैसे थे वो भगतसिंह, मैं उनसे मिलना चाहता हूँ।
गांधी जी से सत्याग्रह का पाठ सीखना चाहता हूँ।
बिना तोप बंदूक चलाए, कैसे आजादी ले ली ?
बिना तीर तलवार चलाए , मातृभूमि उनसे ले ली।
कैसे उनसे मिलूँ मै, जो जांलियावाला बाग में खेत रहे,
कितने अनगिनत वीर बांकुरे, आजादी के लिए लड़े।
रोज सुनाती तू कहानी ऐसे वीर जवानों की,
यह धरती है कर्जदार आजादी के परवानों की,
इस जीवन में देश भक्ति की ज्योत जलाना चाहता हूँ,
कैसे होंगे वो चन्द्रशेखर, मैं उनसे मिलना चाहता हूँ।

स्वरचित

परिंदे

श्रीमती शकुन्तला
पत्नी श्री रवि परिहार
वरिष्ठ लिपिक

परिंदे कब सोचते हैं कहां तक उड़ा जाएं
जंग कब तक लड़नी है परों को हवाओं से
वो सीमाएं कौन सी हैं वो क्षितिज कहां है
जहां थकना है थक कर बैठ जाना है
परिंदे कब सोचते हैं।
आसमान किसका है कितनी ऊंचाइयां छुएं
जमीं किसके हिस्से हैं तिनके कहां से चुने
कौनसी टहनी चुनके घोंसला कहां सजाना है
परिंदे कब सोचते हैं।
किस खेत का दाना मुंह में दबा के ले आए
कौन सी बहती धारा से परों को धो लाए
पुरानी किस हवेली के झरोखों से देखना है पूरा शहर उन्हें
कौन सी बारिश में फिर भीग जाना है
परिंदे कब सोचते हैं, परिंदे कब सोचते हैं ।

स्वरचित

15 सितम्बर का रहता इन्तजार, हिंदी दिवस से है हमको प्यार।

रश्मि–रथि

नरेन्द्र सिंह राजपुत
सहायक

पिछले दिनों भारतीय हिन्दी काव्य जगत के महान कवि श्री रामधारी सिंह दिनकर जी की अमर रचना ''रश्मिरथि'' पढने का अवसर मिला जो कि महाभारत के प्रसंगों पर आधारित है। रश्मि रथि का अर्थ है सूर्य किरण रूपी रथ का सवार। इस काव्य का एक प्रसंग मुझे सबसे अधिक पसंद आया जिसमें युद्ध टालने हेतु भगवान श्री कृष्ण, पांडवों के दूत बन दुर्योधन से पांच गांव मांगते है पर अंहकारी दुर्योधन को यह स्वीकार नही होता एवं वह श्री कृष्ण को बँधी बनाने चलता है। इसी प्रसंग की कुछ पंतिया हैं जो कि आपके साथ साझा करना चाहता हुं :

दो न्याय अगर तो आधा दो, पर, इसमें भी यदि बाधा हो,
तो दे दो केवल पांच ग्राम, रक्खो अपनी धरती तमाम।
हम वहीं खुशी से खायेंगें, परिजन पर असि न उठायेंगे।
दुर्योधन वह भी दे ना सका, आशीष समाज की ले न सका,
उल्टे, हरि को बाँधने चला, जो था असाध्य, साधने चला।
जब नाश मनुष्य पर छाता है, पहले विवेक मर जाता है।
हरि ने भीषण हुकार किया अपना स्वरूप विस्तार किया,
डगमग–डगमग दिग्गज डोले, भगवान कुपित होकर बोले
जंजीर बढ़ा कर साध मुझे, हाँ–हाँ दुर्योधन बाँध मुझे।
यह देख, गगन मुझमें लय है, यह देख, पवन मुझमें लय है,
मुझमें विलीन झंकार सकल, मुझमें लय है संसार सकल।
अमरत्व फूलता है मुझमें, संहार झूलता है मुझमें।
शत कोटी विष्णु, ब्रह्म, महेश, शत कोटी विष्णु जलपति, धनेश,
शत कोटी रूद्र, शत कोटी काल, शत कोटि दण्डधर लोकपाल।
जंजीर बढ़ाकर साध इन्हें, हाँ–हाँ दुर्योधन बाँध इन्हें।
बाँधने मुझे तो आया है, जंजीर बड़ी क्या लाया है।
यदि मुझे बाँधना चाहे मन, पहले तो बाँध अनन्त गगन।
सूने को साध न सकता है, वह मुझे बाँध कब सकता है।
हितवचन नहीं तूने माना, मैत्री का मूल्य न पहचाना।
तो ले मैं भी अब जाता हूँ, अन्तिम संकल्प सुनाता हूँ।
याचना नहीं अब रण होगा, जीवन–जय या कि मरण होगा।

संकलित

हिंदी देश की विरासत है, लोगों ने दी शहादत है।

सफलता के लिए जरूरी है

ओम प्रकाश
सामा.सु.अधि.

किसी भी क्षेत्र में सफलता के लिए नियमित व संयमित जीवन शैली तो आवश्यक है ही, साथ ही कई और भी छोटी - छोटी लेकिन महत्वपूर्ण बातें है जिनका पालन करना आवश्यक है। यदि आप दैनिक जीवन में इन छोटी - छोटी बातों का ख्याल रखते हैं, इन पर सख्ती से अमल करते है तो फिर सफलता का मार्ग आसान और निश्चित हो जाता है। यदि आप अपने करियर में सफलता चाहते है तो निम्न बातों का ख्याल रखें।

मेहनती बने :- सफलता के लिए मेहनत करना सबसे पहला कदम है। यदि आप मेहनत करने के निश्चय के साथ कोई काम करते है तो सफलता निश्चित है। सही समय व मौके (अवसर) को जानकर समझकर मेहनत के साथ किया गया पूर्ण प्रयास सफलता देने वाला होता है। लगातार सीखने की वृत्ति आपको उत्साहित रखती है। साथ ही मेहनत करने की प्रेरणा भी देती है।

समय की पाबंदी :- कार्यस्थल पर समय से पहले पहुंचने की वृत्ति भी सफलता के लिए जरूरी है। पहले पहुंचकर आप सुविधापूर्वक कार्य की शुरूआत कर पाते है। एक कहावत है, 'गुड स्टार्ट हाफ इन' के अनुसार समय से पूर्व पहुंचकर इसे अर्जित किया जा सकता है। उसके कारण आपको और भी कई बातों का ज्ञान होता है। विलंब से पहुंचने के कारण व्यर्थ तनाव उत्पन्न होता है।

इच्छा शक्ति :- दृढ़ इच्छा शक्ति रखकर निर्णय लें। छोटे - छोटे विकल्पों पर भी ध्यान दे। किसी भी फैसले पर शक या संदेह न रखें। दृढ़ इच्छा शक्ति से काम करने में सफलता निश्चित हो जाती है। दृढ़ इच्छा शक्ति का भाव अपने स्वभाव में समाहित कर लें।

दायित्व लें :- सब कार्यो के प्रति, साथ ही स्वयं के प्रति दायित्व बोध रखें। आप स्वयं के लिए स्वयं ही जिम्मेदार है, दूसरी परिस्थिति या लोगों को जिम्मेदार ठहराना ठीक नहीं है। अपने भविष्य का निर्धारण करते समय साफ सुथरी कल्पना मन में रखें। क्या पाना है, क्या करना है ये समझकर स्वयं जिम्मेदारी की भावना रखकर कार्य करें।

सन्तुलन रखे :- सफलता के लिए व्यवहार में संतुलन होना आवश्यक है। पारिवारिक जीवन में और काम के क्षेत्र में संतुलन रखें। जीवन की किसी भी बात का असर कर्म क्षेत्र पर न पड़े, न आप स्वयं इसे कार्य क्षेत्र से जोड़े। परिजनों से, मित्रों से कार्य क्षेत्र को, उसकी समस्या को तनाव को दूर रखें।

व्यावहारिकता :- कार्य क्षेत्र में सभी के साथ व्यवहार कुशल रहें। बात - बात पर गुस्सा करना, चिड़चिड़ाना या उत्तेजित होना गलत प्रभाव उत्पन्न करता है व यह सफलता में बाधक होता है। इसी प्रकार आलस्य, सस्ती लापरवाही भी आपके लिए घातक होगी। आपकी जगह किसी व्यवहारिक व्यक्ति को चुन लिया जाएगा।

जिज्ञासु रहें :- सदैव नई - नई बातों के प्रति रूचि रखें। लगाकर नई बातों का ज्ञान अर्जित करते रहे। सीखने का कोई अवसर हाथ से न जाने दें। लगातार सीखते रहने से, जिज्ञासु बने रहने से आप बोर नहीं होते बल्कि उत्साहित व प्रसन्न रहते है, ये सफलता के लिए टॉनिक का काम करते है।

सीखो चाहे जो भी भाषा, पर याद रखना मातृभाषा।

फिट रहें :- ज्यादा उर्जा के लिए मानसिक और शारीरिक रूप से फिट रहे। मानसिक फिटनेस के लिए प्राणायाम, ध्यान इत्यादि करें। शारीरिक फिटनेस के लिए योग, जॉगिंग दौड़, घूमना इत्यादि करते रहे। नियमित रूप से भोजन करें। पौष्टिक पदार्थों का सेवन करें। लक्ष्य हासिल करने के लिए दोनों का स्वस्थ होना आवश्यक है। अतः सेहत का ध्यान रखे।

लक्ष्य निर्धारित करें :- कई बार हम छोटी – मोटी सफलताओं से ही खुश और संतुष्ट हो जो है। ये आदत भी कई बार बड़े लक्ष्य हासिल करने में सफलता प्राप्त करने में बाधक होती है। अतः बड़ा लक्ष्य रखकर उसे प्राप्त करने में जुटे और उसे हासिल करके ही छोड़े। सफलता पाने के लिए और भी कई बातें आवश्यक है, मगर छोटे – छोटे मुद्दे जो कि बहुत जरूरी है, उनका भी ख्याल रखें।

स्वरचित

नादान मित्रता

नवीना चौधरी
भतीजी गणेश चौधरी
सहायक

है ये थोड़ी नादान मित्रता,
कभी स्नेह से, कभी झगड़ कर।
हो जाती किसी बात पर गुस्सा,
फिर संभल कर देती दिलासा।
कभी कभी मित्रता की बाते,
बड़ी मीठी वाणी मे बोले ।
कभी कर एक दूजे की चुगलिया,
सारा आसमान सर पर ले ले।
कभी उसका दर्द मेरी आंखो से बोले,
कभी मेरी खुशियाँ उसकी बाहों में खेले।
कभी दोनों बैठ कर लगाते कहानियों के मेले,
कभी विपरीत राहों में किसी को न झेले।
स्वार्थ के समंदरों को रखते है दूर,
कभी नही करते हम मित्रो को मजबूर।
कभी स्नेह से, कभी झगड़ कर,
ऐसी है ये थोड़ी नादान मित्रता।

स्वरचित

जानता हूँ मैं

गोपाल कृष्ण पारीक
शाखा प्रबन्धक
(सेवानिवृत्त)

तेरी रूह तक जाना चाहता हूँ मै,
बीच मे जिस्म नहीं आता जानता हूँ मै,
मिट नहीं पाएगी तेरी चाहत जानता हूँ मै,
खंजर की फजा है ताजी जानता हूँ मै,
मगर कुर्बानी है अल्लाह की नेमत जानता हूँ मै,
समंदर क्या बड़ा है, तेरे दिल के आगे जानता हूँ मै,
सैलाब बहता है मेरे अंदर पहचानता हूँ मै,
घर रेत पर बनाया है, जानता हूँ मै,
हरियाली जिंदा रहेगी जानता हूँ मै,
तेरी गली मे आया हूँ जानता हूँ मै,
दीवाना हूँ, जान गई है दुनिया, जानता हूँ मै,
भटका हुआ हूँ कहती है दुनिया, जानता हूँ मै,
भटकना ही इश्क है, पहचानता हूँ मै,
घर के सामने तेरे बरसों से खड़ा हूँ, जानता हूँ मै,
सर्द चेहरा तेरा, आँखों से मेरी पढ़ा नहीं जाएगा, जानता हूँ मै,
यहीं पर ठीक हूँ, बाहों तक जाने मे ख्वाब टूटेगा, जानता हूँ मै,
पानी आँख के अंदर ही रहे, बहेगा तो टूटेगा दिल जानता हूँ मै,
पानी आदमी की जरूरत है, जानता हूँ मै,
प्यास जिंदा रहे यही तो चाहता हूँ मै,
दरिया तेरा खुला है मेरे लिए, जानता हूँ मै,
किरदार दोनों जिंदा रहे यही तो चाहता हूँ मै,
आग का दरिया तपा देगा जानता हूँ मै,
तपन जिंदा रहे यही तो चाहता हूँ मै,

स्वरचित

यादों के झरोखे से – सुनहरे पल

गोपाल कृष्ण पारीक
शाखा प्रबन्धक
(सेवानिवृत्त)

निगम सेवाकाल का 35 वर्ष से अधिक अवधि को स्मरण करता हूँ तब एक ही मूल मंत्र अधिकारी गण पर अटूट श्रद्धा, संयोजित टीम भावना एवं बीमित से निस्वार्थ प्रेम जो अनहोनी को होनी करने मे सक्षम है।

निगम का उद्देश्य है कामगारों को भय मुक्त करना। जब बीमारी अपंगता, प्रसव, मृत्यु से मुकाबला करना होता है उस समय भय मुक्ति आर्थिक एवं मानसिक संबल देकर ही की जा सकती है।

यह सब तभी संभव है जब की कामगार अथवा उसके परिवार जन के स्थान पर अपने आप को रखें। हजारों की संख्या मे बीमित एवं परिवार जन से दूरभाष पर, लिखित रूप मुझे धन्यवाद पत्र आभार संदेश प्राप्त हुए। यह मेरे जीवन की सबसे बड़ी पूँजी है।

जब कोई कहता है यह नहीं हो सकता, वहीं पर मुझे होने की संभावना के प्रति प्रेरित करता रहा। स्थानीय कार्यालय नियमावली, मुख्यालय निर्देश, ई.एस.आई. एक्ट, अधिकारीगण व हितलाभ शाखा कार्मिकों से चर्चा इसमे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। मामले विशेष मे आत्मचिंतन जरूरी है।

मृत्यु प्रकरणों एवं स्थायी अपंगता के मामलों मे नियोजक, बीमित का रेकॉर्ड, दुर्घटना विवरण व उसकी परिस्थितियों का तालमेल सुनिश्चित करना जांच अधिकारी का प्रधान दायित्व है। क्षेत्रीय कार्यालय/उप क्षेत्रीय कार्यालय को निर्णय के लिए स्पष्ट सहयोगात्मक रवैया प्रदान करना शाखा कार्यालय का कर्तव्य है। जहां शाखा कार्यालय संशय मे होते हैं, वहाँ किस कारण से संशय है जांच रिपोर्ट मे स्पष्ट अनुसंशा देने पर उप क्षेत्रीय कार्यालय/क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा त्वरित निर्देश दिए जा सकते है।

देरी को कम करने के लिए ईमेल/दूरभाष सूचना के साथ शीघ्र निष्पादन मे सहायक है। मेरे कार्यकाल के अंतिम दो वर्ष – एक वर्ष उप क्षेत्रीय कार्यालय, जोधपुर तथा एक वर्ष शाखा कार्यालय, जोधपुर मे तैनाती रही। मै जिससे प्रेम करता हूँ, वह करता हूँ, मै वह करता हूँ जिससे प्रेम करता हूँ। कार्य एक बोझ नहीं ऊर्जा है, और यही अनवरत ऊर्जा प्रदान करता है।

शाखा कार्यालय, जोधपुर मे जीतेंद्र स्थायी अपंगता का प्रकरण जिसमे बीमित के रोजगार चोट के दौरान पैर कट गये थे। जीवन मे निराशा – आंखो मे आँसू लिए परिवार जन व बीमित शाखा कार्यालय मे आए। मैंने प्रबन्धक कक्ष मे बुलाया जल पान के बाद आँसू रोकने के लिए कहा। कितना सुंदर चेहरा है तुम्हारा। तुम्हारी भुजाओ मे बल है। मस्तिष्क मे ताकत है। तुम्हारी स्थिति मे आई ए एस बने हैं। तुम्हारे परिवार की तुम धरोहर हो। क्या तुम चाहोगे की तुम्हारे कारण परिवार जन दुःखी हों। निराशा को त्यागो। सत्य को स्वीकारो। कर्मपथ पर चलते-चलते गिरने के बाद दोगुनी ताकत उठा भी जा सकता है। बीमित को आर्टिफिशियल लैंब सेंटर के लिए परामर्श दिया गया। करीब 100 घंटो अलग-अलग समय मे उत्साहित किया। परिणाम यह रहा कि 30 नवम्बर 2021 को बीमित ने चरण स्पर्श किया और कहा कि मै आपकी कुछ सहायता करने के काबिल हो गया हूँ। बीमित ने आर. ए. एस. प्री पास कर ली थी। उस समय मैंने ईश्वर को पहचाना। बीमित को अधिकारीगण एवं मेरे सहयोगियों से रिटायरमेंट पार्टी के दौरान मिलवाया। मृत्यु प्रकरण – आश्रितजन हितलाभ स्व. निरंजन के मामले मे जो कि राजस्थान राज्य विद्युत वितरण निगम से संबद्ध था। मृत्यु प्रकरण फरवरी माह मे प्राप्त हुआ था तथा फरवरी माह मे ही शाखा कार्यालय स्तर पर स्वीकार किया गया। 05/03/2021 को प्रथम आश्रितजन हितलाभ का

हिंदी का जय - जयकार करे, हिंदी से हम सब प्यार करें।

चैक एसिक पखवाड़े के दौरान श्री आर. के. मीणा, उप निदेशक महोदय, श्री रमेश राय, उप निदेशक महोदय, श्री कमल कुमार मीणा एवं श्री हीरलाल शर्मा, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी की गरिमामयी उपस्थिती मे शाखा कार्यालय, जोधपुर मे आश्रिता को प्रदान किया गया। दुर्घटना रिपोर्ट प्राप्त होने से एक माह से भी कम की अवधि मे आश्रिता श्रीमति वर्षा हितलाभ को पाकर संतुष्ट थीं। आश्रिता ने जिसे खो दिया वह नहीं दिया जा सकता लेकिन निगम द्वारा त्वरित आर्थिक संबल प्रदान कर मानव सेवा के संकल्प को पूर्ण किया जा सकता है।

शाखा कार्यालय, जोधपुर स्टाफ का अनन्य सहयोग तथा बीमा चिकित्सा अधिकारी प्रभारी का चिकित्सकीय मार्गदर्शन हितलाभ प्रकारणों के लिए संजीवनी रहा है। उप क्षेत्रीय कार्यालय स्टाफ द्वारा समुचित सहयोग तथा श्री आर. के. मीणा, उप निदेशक(हितलाभ) एवं श्री रमेश राय, उप निदेशक महोदय द्वारा प्रदान दिशा निर्देश ने अनेकों बीमित/परिवार जन को उम्मीद की रोशनी देने मे वरदान रही है। क्षेत्रीय निदेशक महोदय द्वारा जोधपुर दौरे के दौरान/ क्षेत्रीय कार्यालय, मे फाइलें जाने पर त्वरित निपटान बीमित/परिवार जन के लिए दिव्य प्रकाश पुंज रहा है।

स्वरचित

जिन्दगी

यशपाल जोईया
वरिष्ठ लिपिक

इस दुनिया में हर कतरे की एक कहानी है,
जो कोई सुन ले तो मेहरबानी है,
दर्द के लम्हे, खुशी के अफसाने हिस्सा है हर किसी की दास्तां का,
कभी था महफिलों से सजा हुआ, कभी रास्ता वीरान था,
जो आंखे आज पुरनाम हैं कभी रोशन थी तारों सी,
जो बेपरवाह बेफिक्र आजाद है, उस पर भी बंदिशे थी दीवारों सी,
आगाज से अंजाम तक हर सफर की एक अलग रवानी है,
इस दुनिया में हर कतरे की एक कहानी है,
जो कोई सुन ले तो मेहरबानी है,
कहीं शोर भी चुप है तो कहीं खामोशी की भी आवाज है,
किसी के किस्से हर शहर में मशहूर हैं तो किसी के खुद से भी कई राज हैं,
दर्द को मिटाने का किसी का ये तो किसी का वो जाम है,
आखिर में सबकी कहानियों का 'जिंदगी' ही इकलौता नाम है,
गौर करे जो कोई तो मुझे भी एक कहानी किसी को सुनानी है,
इस दुनिया में हर कतरे की एक कहानी है,
जो कोई सुन ले तो मेहरबानी है.....
मेहरबानी है..... मेहरबानी है.....

स्वरचित

हिंदी है तेरा मेरा अभिमान, राष्ट्र का है यह मान।

कोरोना बीमारी नहीं संदेश है

सी.पी.आर्य
वरिष्ठ लिपिक

कुदरत से नाजायज जंग मत कर
हर चीज को हजम मत कर
सब कुछ पाने की जिद मत कर
बेवजह की चाहत मत कर
अपनी बेयूदा हरकतों से लज्जित मत कर
जिसकी सजा औरों को मिले वे गुनाह मत कर
अपनों से क्या गैरों से भी फरेब मत कर
यकीन रख हर किसी पर शक मत कर
मैं हूँ सर्वेसर्वा यह गरूर मत कर
कुछ नहीं होगा तेरा यह भ्रम मत कर
कोरोना बीमारी नहीं संदेश है
इसे समझने में अब देर मत कर ।

स्वरचित

स्वच्छन्द जीवन

सिद्धार्थ खत्री
वरिष्ठ लिपिक

यह तेरह मई, शनिवार था !
मेरे जन्म पर हर कोई, खुशगवार था!
पत्थर और मिट्टी के बने संसार में मैं आया,
जिसे क्रूर और भंगुर, जैसे भी बनाया!
शुरुआत में तो सब कुछ ही तुम्हारे लिए तैयार था !
लेकिन तुरंत बाद करना मुझको इसका भुगतान था!
तुम हो वो घोड़ा जो हिनहिनाए नहीं,
9 से 5 दौड़े मैदान में, पर थक जाए नहीं!
कैसे ये जिंदगी जा रही अंधकार में,
रोज जाना उसी जगह व्यापार में।
अगले 30 सालो तक, जो 3 दशक है,
चलो एक आपात बैठक बुलाते है और सहायता के लिए चिल्लाते है।

स्वरचित

राष्ट्रभाषा होती है देश की शान, हर नागरिक को होता है अभिमान।

स्वस्थ जीवन का रहस्य

राजेश सोनी
सहायक

जीने का मतलब, औरों के जीवन सँवारने के लिए जीयो ,
जरूरी नहीं कि उनके बदले में अपनों से दूरियाँ बनाओं।
जब मन खुश, तब तन में हुलास,
जब मन उदास, तब तन में थकान,
जब मन में जिज्ञासा, तब तन में मर्म
जब मन में निराशा, तब तन में दर्द
जब तन से मन, मन से तन में द्वंद हो और आवाज आए, कि कौन किससे कम?
तब द्वंद में दिमाग का सामंजस्य की ओर अग्रसर हो हम,
जब तन-मन अकेला, दर्द होना है स्वाभाविक,
शारीरिक हो या मानसिक, बीमारी होना है स्वाभाविक,
बीमारी से सामना होना है स्वाभाविक,
यदि जीना है सही, तो सही कदम बढ़ाओ,
तन-मन को दिमाग के साथ सामंजस्य बैठाओ,
नए जज़्बे को सवारों, जीवन को ऊंचा उठाओ,
खुद से पूछो, इस जीवन का मूल्य,
आओ! हम सब उठें, प्रण लें, मानवता के उत्थान में अपना जीवन समर्पित करें,
यही है जीने का मतलब, औरों का जीवन सवारों और खुद आनंदित होकर जियो।

स्वरचित

विचार सागर

हीरालाल शर्मा
सामा. सु. अधि.

कोयल अपनी भाषा बोलती है,
इसलिये आजाद रहती है ।
किन्तु तोता दूसरे की भाषा बोलता है,
इसलिए पिजरे मे जीवन भर गुलाम रहता है।
अपनी भाषा अपने विचार और अपने आप पर विश्वास करे।
सत्य पर चलने वाले परेशान हो सकता है परंतु पराजित नहीं।

स्वरचित

जब विदेश में हम है रहते, हिंदी सुनने को कान तरसते।

स्वच्छ भारत

स्वयं साफ रहना और अपने आस - पास साफ - सफाई रखना बहुत जरूरी है।
हम सब मिलकर भारत को स्वच्छ बनाएंगे।

नेहा ने एक केला खाया,
खाकर छिलका वहीं गिराया।
तभी वहाँ इक चिड़िया आई,
सर पकड़कर वह झल्लाई।

अपनी चोंच खोल चिड़िया ने,
उस छिलके को तुरंत उठाया।
छिलका कूड़ेदान में डाला,
प्यार से नेहा को समझाया।

बोली चिड़िया ''ठीक नहीं है,
सड़क पर यूं कूड़ा फैलाना।
प्यारी नेहा हमको अपना,
प्यारा भारत स्वच्छ बनाना।

हम सब सदा घरों में अपने,
साफ - सफाई रखते हैं।
फिर बोलो सड़कों - गलियों को,
क्यों हम गंदा करते हैं ?

साफ रहेंगे - साफ रखेंगे,
आज कसम हम खाते हैं।
कहीं करेगा कोई न गंदा,
भारत स्वच्छ बनाते हैं।

वैभवी भोजवानी
पुत्री श्री गिरीश भोजवानी (सहायक)

संकलन - सुनहरी धूप, हिन्दी पाठ्य पुस्तक

चलो चले हिंदी की शरण, हिंदी दिवस पर ले यह प्रण।

मेरा गाँव

भरत कुमार डांगी
वरिष्ठ लिपिक

छोटा सा गांव मेरा पुरा बिग बाजार था
एक नाई, एक मोची, एक लुहार था

छोटे - छोटे घर थे
हर आदमी बडा दिलदार था

कहीं भी रोटी खा लेते
हर घर में भोजन तैयार था

बडी की सब्जी मजे से खाते थे
जिसमें आगे शाही पनीर बेकार था।

दो मिनट की मैगी ना,
झटपट दलिया तैयार था (तैयार था)

नीम की निम्बोली और शहतुत सदाबहार था
छोटा सा गांव मेरा पूरा बिग बाजार था

अपना घडा कस के बजा लेते
समारू पुरा संगीतकार था

मुल्तानी माटी से तालाब में नहा लेते
साबुन और स्विमिंग पूल बेकार था

ओर फिर कबड्डी खेल लेते
हमे कहां क्रिकेट का खुमार था

दादी की कहानी सुन लेते
कहां टेलीविजन और अखबार था

भाई - भाई को देख के खुश था
सभी लोगों में बहुत प्यार था
छोटा सा गांव मेरा पूरा बिग
बाजार था

स्वरचित

जैसे होती माँ की इज्जत, वैसे करे मातृभाषा की इज्जत।

"मारवाड़ सु गायब होता"

भरत पंवार
बहु कार्य कर्मचारी

ॐ आँचल और दुपट्टा गायब, घूँघट वाली औट कठे,
मीठा बोले बे होंठ कठेचूल्हा सु क्योड़ा रोंट कठे,
महंगाई खागी बे नोट कठे .....

मोबाईल पर बणिया अब फ्रेंड अटे,
पण यार दोस्त रो साथ कठे,
कोई मदद करे बे हाथ कठे.....

सावन की बा बरसात कठे,
फुर्सत बाला दिन-रात कठे,
बचपन में लड़ता बे बात कठे.....

बचपन कि मस्ती याद आवे,
माथे चोटी होती बा टाट कठे
दूध दही घी रा ठाठ कठे।

बे तोल ताकड़ी बाट कठे,
आँगन मे बिछती खाट कठे,
बे मीठी मीठी बांता कुठे

माँ-बाप ने बेटों धमकावे,
अब श्रवण जिस्या पूत कठे,
खादी कपड़ा का सूट कठे.....

रेतां मे रमता भूत कठे,
गुरु ठोकता हा ... बे जूत कठे,
रोता जण चुप करवाला दोस्त कठे....

अब खड्या बफे खाणा होग्या
जीमण में बा मनुहार कठे,
संयुक्त आज परिवार कठे....
बे हैत, प्रीत और प्यार कठे,

दिल अपना खेल दो, हिंदी में कुछ तो बोल दो।

बच्चा में बे संस्कार कठे,
बूढ़ा मायतो कि सीख कठे....

बूढ़ा मायता को मान कठे।
नेताओ में ईमान कठे,
अब जीणों आसान कठे ।

अब जाति धर्म मे बँटया लोग
पेलालों हिन्दुस्थान कठे..
पुराणो अपणों हिंदुस्तान कठे.. ।।

स्वरचित

।।खुश हूँ।।

भरत पँवार
बहु कार्य कर्मचारी

जिंदगी मे खुश हूँ, हर हालत मे खुश हूँ ।।
आज गाड़ी नहीं है,
दो कदम चल कर ही खुश हूँ ।।
आज किसी का साथ नहीं है,
किताब पढ़ कर ही खुश हूँ ।।
आज कोई नाराज है,
उसके इसी अंदाज में भी खुश हूँ ।।
जिसको देख नहीं सकता मे,
उसकी आवाज सुनकर ही खुश हूँ ।।
जिसको पा नहीं सकता,
उसकी हशिन यादों में खुश हूँ ।।
बीता पल हुआ जो चला गया,
उसकी मीठी यादों में ही खुश हूँ ।।
हँसते हँसते ये पल बीते,
ये सोच मे ही खुश हूँ।।
जिंदगी के हर हालत मे खुश हूँ.....

स्वरचित

एकता और भाईचारा बढेगा, जब हर कोई हिंदी में बात करेगा।

राजस्थान का दिल : जोधपुर
पारम्परिक और आधुनिक वैभव का अभूतपूर्व संगम

नरेन्द्र राठौड़
सहायक

जोधपुर थार मरूस्थल का प्रवेश द्वार है। एक नजर शहर पर डालें तो सभी मकान हल्के नीले रंग के दिखाई देते हैं, जैसे आसमान उतर आया है जमीन पर। लाल रंग के पत्थरों का समृद्ध किला और उसके पास मोती सा चमकता जसवन्त थड़ा। किले, महल, मंदिर, हवेलियाँ और बहुत सारे पर्यटन स्थल, जोधपुर को पर्यटकों में लोकप्रिय बनाते हैं। 'ब्लू सिटी' के नाम से लोकप्रिय 'जोधपुर' राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा शहर है। यहाँ अधिकांश स्थापत्य - महलों, मंदिरों, हवेली और यहां तक कि घरों को भी नीले रंग से रंगा गया है। वर्ष भर सूर्य यहाँ अपनी विशेष दमक दिखाता है। अतः जोधपुर को 'सूर्य नगरी' के नाम से भी जाना जाता है। मेहरानगढ़ का विशाल भव्य किला इस शहर को एक अलग ही पहचान देता है जो एक पहाड़ी चट्टान पर आठ द्वारों के साथ विद्यमान है। किले के बाहर नया नगर है। इसीलिए जोधपुर में पारंपरिक और आधुनिकता का एक सुंदर सम्मिश्रण नजर आता है। जोधपुर केवल यहीं पाए जाने वाले मारवाड़ी या मालानी घोड़ों की दुर्लभ नस्ल के लिए भी जाना जाता है। इस समृद्ध शहर का सम्पूर्ण इतिहास राठौड़ वंश के इर्द-गिर्द घूमता है। राठौड़ प्रमुख राव जोधा ने 1459 ईस्वी में जोधपुर का निर्माण किया। शहर की प्राचीन राजधानी, मण्डोर के स्थान पर जोधपुर को बनाये जाने के भी उल्लेख मिलते हैं। जोधपुर और आस पास के इलाकों के लोगों को आज भी 'मारवाड़ी' के नाम से जाना जाता है। जोधपुर के प्रमुख आकर्षण और दर्शनीय स्थल - आइए, जोधपुर के आकर्षक स्थलों की सैर करें। राजस्थान में बहुत कुछ नया-निराला है, देखने के लिए।

मेहरानगढ़ किला

जोधपुर के क्षितिज पर शोभायमान 125 मीटर ऊँची सीधी पहाड़ी पर अभेद्य मेहरानगढ़ किला है। यह ऐतिहासिक किला भारत में सर्वाधिक लोकप्रिय किलों में से एक हैं। यह इतिहास और किंवदंतियों में सदा जीवित रहा है। किला अपने उत्तम मेहराबदार झरोखों, नक्काशीदार पट्टिकाओं, सजावटयुक्त द्वारों और मोती महल, फूल महल और शीश महल की चित्रित दीवारों के लिए जाना जाता है। राजस्थान में आने वाले सभी देशी-विदेशी पर्यटक जब इस किले को देखते हैं तो सिर इतना ऊँचा करना पड़ता है कि उनकी टोपी गिर जाती है। इसका ऐतिहासिक, पारम्परिक, आधुनिक और लोकप्रिय वैभव, पर्यटकों को अभिभूत कर देता है।

चामुंडा माताजी मंदिर

देवी चामुंडा माताजी राव जोधा की आराध्य देवी थीं और इसलिए उनकी प्रतिमा मेहरानगढ़ किले में प्रतिष्ठित की गई। अतः किले में पूजा का स्थान बन गया और वहां एक मंदिर बन गया। तब से स्थानीय लोग चांमुडा माता की पूजा की परम्परा निभाते आ रहे हैं। देवी आज भी शाही परिवार की 'कुल देवी' हैं।

रानीसर-पद्मसर

रानीसर और पद्मसर, मेहरानगढ़ में फतेह पोल के पास 1459 में बनाई गई दो कृत्रिम झीलें हैं। रानीसर झील, राव जोधा की पत्नी रानी जसमदे हाड़ी के आदेश पर बनवाई गई थी, जबकि पद्मसर झील को राव गंगा की रानी एवं मेवाड़ के राणा सांगा की पुत्री पद्मिनी द्वारा बनवाया गया था।

जसवंत थड़ा

19वीं शताब्दी के अंत में निर्मित श्वेत संगमरमर का आकर्षक स्मारक, नायक जसवंत सिंह को समर्पित है। जोधपुर पर

हम सबको जब हिंदी भाएगी, देशवासियों को साथ लाएगी।

शासन करने वाले जसवंत सिंह ने अपने राज में अनेक निर्माण और विकास किए। उन्होंने अपराध को कम करने, डकैती निर्मूलन, रेल सेवा निर्माण और मारवाड़ की अर्थव्यवस्था के सशक्तिकरण के लिए अनेक ठोस कदम उठाये।

उम्मेद भवन महल

यह बीसवीं सदी का महल, एकमात्र ऐसा महल है जो बाढ़ राहत परियोजना के अन्तर्गत निर्मित किया गया था। इस महल की शान को बरकरार रखने का श्रेय पूर्व महाराजा को जाता है। इसका रख रखाव, इसकी सज्जा, इसके हरे-भरे बगीचे और रात के समय, इस पर की जाने वाली रौश्नी, महल में चार चाँद लगा देती है। वर्ष 1929 में महाराजा उम्मेद सिंह ने उम्मेद भवन महल अकाल राहत योजना के अन्तर्गत बनवाया था। छीतर पहाड़ी पर प्रस्तरों से महल का निर्माण किया गया, अतः यह महल 'छीतर महल' भी कहलाता है। यह महल हेनरी वॉघन लैन्चेस्टर नामक एक प्रसिद्ध ब्रिटिश वास्तुकार द्वारा डिजाईन किया गया था जिसे पूरा करने में 16 वर्ष लगे थे। बलुआ पत्थर और संगमरमर के साथ निर्मित, महल की स्थापना कला 'इंडो सरसेनिक क्लासिकल रिवाइवल' और पश्चिमी आर्ट डेको शैली की मिश्रित संरचना हैं। यह दुनिया के सबसे बड़े निजी निवास स्थानों में से एक माना जाता है, जो डेको शैली में निर्मित है और सबसे बेजोड़ भवनों में से एक है। यहाँ ये भी उल्लेखनीय है कि यह 20वीं सदी में निर्मित एक मात्र महल है। इस महल को कुछ वर्ष पहले, हैरिटेज होटल्स ग्रुप के द्वारा होटल में परिवर्तित कर दिया गया था। राजस्थान में आने वाला समृद्ध पर्यटक, जोधपुर आने पर इसी होटल में ठहरना पसन्द करता है।

जोधपुर राजकीय संग्रहालय

उम्मेद बाग के मध्य में बने जोधपुर राजकीय संग्रहालय में शस्त्रागार, शाही वस्त्र आभूषण, स्थानीय कला और शिल्प, लघु चित्रकारी, शासकों के चित्र, पांडुलिपियां और जैन तीर्थंकरों की छवियों सहित प्राचीन अवशेषों का एक समृद्ध संग्रह है। वन्यजीव प्रेमी इसके समीप स्थित चिड़ियाघर भी देख सकते हैं।

घंटाघर

जोधपुर शहर के बीच में स्थित घंटाघर का निर्माण जोधपुर के महाराजा श्री सरदार सिंह जी (1880-1911) ने करवाया था। यहां के सबसे व्यस्त सदर बाजार में स्थित यह घंटाघर अद्भुत व ऐतिहासिक है। सदर बाजार देशी व विदेशी पर्यटकों में काफी लोकप्रिय है। यहां राजस्थानी वस्त्र, स्थानीय छपाई के कपड़े, मिट्टी की मूर्तियां व बर्तन, खिलौने, पीतल, लकड़ी व संगमरमर के बने ऊँट-हाथी और मार्बल-इन-ले में बना सजावटी सामान प्रचुर मात्रा तथा उचित दामों पर मिलता है। उत्तम श्रेणी के चांदी के जड़ाऊ गहने खरीदने के लिए भी यह उपयुक्त स्थान है।

महामंदिर मंदिर

महामंदिर, जिसका शाब्दिक अर्थ महान मंदिर है, एक पवित्र स्थान है जहाँ सर्वत्र शांति व्याप्त है। ये मंदिर मंडोर मार्ग पर स्थित है और अनूठे वास्तुशिल्प का प्रत्यक्ष प्रमाण है। यह 84 खंभों पर टिका है और दीवारों पर योग के विभिन्न पदों को दर्शाते विस्तृत रेखांकन और आंकड़ों के साथ शोभायमान है।

मंडलेश्वर महादेव

923 ई. में मंडलेश्वर महादेव मंदिर का निर्माण श्री मंडलनाथ ने किया था। यह शहर में सबसे प्राचीन मंदिरों में से एक माना जाता है। मंदिर की दीवारों में भगवान शिव और देवी पार्वती के असीम सुंदर चित्र हैं।

सरदार समंद झील और महल

महाराजा उम्मेद सिंह के शाही परिवार के सदस्यों के मनोरंजन के लिए सरदार समंद झील के किनारे पर बोट हाउस,

स्विमिंग पूल, टैनिस तथा स्कवॉश के कोर्ट (मैदान) और पैदल-पथ बनवाए थे। पर्यटकों के देखने व घूमने तथा मनोरंजन के लिए यहाँ बहुत कुछ है। वर्ष 1933 में महाराजा उम्मेद सिंह ने सरदार समंद झील के तटों पर एक शानदार शिकारगाह बनवाया जो एक महल है। यह शाही परिवार का पसंदीदा आश्रम स्थल है, जहां उनकी अनेक ऐतिहासिक वस्तुओं का संग्रह है। जिसमें अफ्रीकी ट्राफियां और प्राचीन प्राकृतिक चित्रों का विशाल संग्रह है। झील में अनेक प्रवासी और स्थानीय पक्षियों के प्रवास सैलानियों को आकर्षित करते हैं। जैसे हरा कबूतर, हिमालय क्षेत्र का गिद्ध और चितकबरी बड़ी बतख, जिससे यह क्षेत्र पक्षी प्रेमियों के लिए स्वर्ग के समान प्रतीत होता है।

मसूरिया हिल्स

राजस्थान के तीन सबसे सुंदर और प्रसिद्ध उद्यानों में से एक मसूरिया हिल्स जोधपुर के मध्य में मसूरिया पहाड़ी के ऊपर स्थित है। स्थानीय देवता बाबा रामदेव को समर्पित प्राचीन मंदिर होने के कारण यह स्थल भक्तों में अति लोकप्रिय है। यहाँ एक होटल है जहां से शहर की मनोरम छवि को निहारा जा सकता है।

शास्त्री सर्कल

शहर के मध्य में स्थित शास्त्री सर्किल नाम का एक चौराहा है। दिन के समय बेहद व्यस्त यह चौराहा रात को दमकती रोशनी और भव्य फव्वारे की मनोहारी छवि से बेहद आकर्षक प्रतीत होता है। यह स्थल स्थानीय लोगों के साथ साथ पर्यटकों को भी आकर्षित करता है।

कायलाना झील

जैसलमेर रोड पर छोटी कृत्रिम झील कायलाना झील, एक सुंदर पिकनिक स्थल है। कैनवास के चित्र जैसी दिखती इस झील की रमणीयता अविस्मरणीय है। आर.टी.डी.सी. के माध्यम से झील में विहार हेतु नौकायन सुविधाएं भी उपलब्ध हैं।

माछिया सफारी उद्यान

जैसलमेर मार्ग पर कायलाना झील से लगभग 1 किलोमीटर दूर माछिया सफारी उद्यान स्थित है। यह एक पक्षी विहार है। यहां हिरण, रेगिस्तान की लोमड़ियां, विशाल छिपकली, नीलगाय, खरगोश, जंगली बिल्लियां, लंगूर, बंदरों जैसे कई पशु पाये जाते हैं। उद्यान सूर्यास्त के दृश्य के लिए भी सुविख्यात है।

बालसमंद झील

जोधपुर से लगभग 5 किलोमीटर की दूरी पर जोधपुर मंडोर रोड पर बालसमंद झील स्थित है। इसका निर्माण 1159 ईस्वी में मंडोर के एक जलस्त्रोत हेतु किया गया था। बाद में बालसमंद झील के किनारे पर एक ग्रीष्म महल निर्मित किया गया। यह हरे-भरे बागानों से घिरा हुआ है। यहां आम, पपीता, अनार, अमरूद और पलाष जैसे पेड़ों को देखा जा सकता है। पशु और पक्षियों जैसे लोमड़ी और मोर भी यहाँ पाए जाते हैं। यह झील अब पर्यटकों और स्थानीय लोगों का एक लोकप्रिय पिकनिक स्थल है।

चोखेलाव बाग और इन्टरप्रिटेशन सैन्टर

आइए, देखिए मेहरानगढ़ फोर्ट के साथ ही आगे की ओर बना हुआ 'चोखेलाव बाग'। यह दो सौ साल पुराना बाग, जिस की विभिन्न बनावट, मनभावन गूंज और सुगन्धित फूलों से भरपूर है तथा अठाहरवीं शताब्दी के पुराने मारवाड़ के बाग बगीचों जैसे इस बाग को मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट द्वारा एक बोटैनिकल म्यूजियम के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है। क्योंकि इसमें मारवाड़ क्षेत्र के स्थानीय ऐतिहासिक पेड़ पौधे लगाए तथा प्रदर्शित किए गए हैं। यह बाग, गुजरे जमाने की तरह आज भी प्रकृति की सुन्दरता और प्राकृतिक छठा से आनन्दित है तथा मौसम के रंगों के साथ ही रंग बदलता है। बगीचे का ऊपरी

स्टूडेंट स्लोगन आगे बढाओ, हर व्यक्ति एक इनको पहुँचाओं।

भाग, सुन्दर, विभिन्न रंगों के फूलों से लदा हुआ, कालीन की तरह लगता है। यह बाग रात के समय भी उतना ही जादुई नजर आता है जब 'महताब बाग' या 'मूनलाइट गार्डन' में नीचे की तरफ की सजीव सुन्दरता जीवंत हो उठती है और जब मीठी महक वाली, सुवासित कामिनी (मौर्या एक्सोशिया) और सफेद चाँदनी के फूल (टैबरनेमोन्टाना कोरोनेरिया) की चमक रात को रौशन कर देती है। आइए, इस बाग को देखिए और अपने साथ इसके कामुक, भावमय अनुभव, जिसमें अठारहवीं शताब्दी के राजपूत गार्डन की महक शामिल है, साथ ले जाइए।

खेजरला किला

मुख्य शहर से 85 किलोमीटर की दूरी पर स्थित, 400 वर्ष पुराना खेजरला किला ग्रामीण अंचल में स्थित है। वर्तमान में होटल में परिवर्तित, सुर्ख लाल बलुआ पत्थर का यह स्मारक, राजपूत स्थापत्य कला का एक अच्छा उदाहरण है। किले की प्राकृतिक सुन्दरता, कटावदार मेहराब और नक्काशीदार झरोखे पर्यटकों को मंत्रमुग्ध करते हैं।

यहाँ कैसे पहुंचें

- जोधपुर दिल्ली और मुम्बई से जुड़ा है और हवाई अड्डा शहर के केन्द्र से लगभग 5 किलोमीटर की दूरी पर है।
- सड़क से सभी प्रमुख शहरों और कस्बों से जोधपुर अच्छी प्रकार जुड़ा हुआ है।
- जोधपुर भारत के सभी महानगरों और प्रमुख शहरों से सीधे रेलगाड़ियों से भली प्रकार जुड़ा हुआ है।

स्त्रोत : https://www.tourism.rajasthan.gov.in/hi/jodhpur.html

समाज के हित के लिए कविता

हीरालाल शर्मा
सामा. सु. अधि.

कहाँ पर बोलना है और कहाँ बोल जाते है ।
जहां खामोश रहना है वहाँ मुंह खोल जाते है ।
कटा जब शीश सैनिक का तो हम खामोश रहते है।
कटा एक सीन पिक्चर का तो सारे बोल जाते है।
नयी नस्लों के ये बच्चे..
नयी नस्लों के ये बच्चे जमाने भर की सुनते है।
मगर माँ बाप कुछ बोलते है तो बच्चे बोल जाते है।

स्वरचित

दिखते है तब हमारे संस्कार, हम करते है जब नमस्कार।

उप क्षेत्रीय कार्यालय जोधपुर में विभिन्न गतिविधियाँ

राजभाषा पखवाड़ा समारोह 2021

उप क्षेत्रीय कार्यालय जोधपुर में दिनांक 04 सितम्बर 2021 से 14 सितम्बर 2021 तक राजभाषा पखवाड़ा बड़े ही हर्षोल्लास से मनाया गया। जिसमें अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा उत्साहपूर्वक विभिन्न प्रतियोगिताओं में बढ़ - चढ़कर भाग लिया। कुल चार प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें हिन्दी निबंध प्रतियोगिता, हिन्दी टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता, हिन्दी वाक प्रतियोगिता एवं हिन्दी ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया है। विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेताओं को नकद पुरस्कार के साथ - साथ प्रमाण - पत्र वितरित किये गये। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं के नाम निम्नवार है :-

हिन्दी निबंध प्रतियोगिता

- प्रथम पुरस्कार (एक) ₹ 1800/- - श्री गौरव शर्मा, वरिष्ठ लिपिक
- द्वितीय पुरस्कार (एक) ₹ 1500/- - श्री गणेश चौधरी, वरिष्ठ लिपिक
- तृतीय पुरस्कार (एक) ₹ 1200/- - श्री यशपाल जोईया, कनिष्ठ लिपिक
- प्रोत्साहन पुरस्कार (प्रथम) ₹ 500/- - श्री नवरतन सुथार, कनिष्ठ लिपिक
- प्रोत्साहन पुरस्कार (द्वितीय) ₹ 500/- - श्री दिनेश कुमार, कनिष्ठ लिपिक

हिन्दी टिप्पण - आलेखन प्रतियोगिता

- प्रथम पुरस्कार (एक) ₹ 1800/- - श्री गणेश चौधरी, वरिष्ठ लिपिक
- द्वितीय पुरस्कार (एक) ₹ 1500/- - श्री भीमसिंह चौधरी, वरिष्ठ लिपिक
- तृतीय पुरस्कार (एक) ₹ 1200/- - सुश्री अपूर्वा जैन, आशुलिपिक
- प्रोत्साहन पुरस्कार (प्रथम) ₹ 500/- - श्री प्रदीप शर्मा, वरिष्ठ लिपिक
- प्रोत्साहन पुरस्कार (द्वितीय) ₹ 500/- - श्री गौरव शर्मा, वरिष्ठ लिपिक

हिन्दी वाक् प्रतियोगिता

- प्रथम पुरस्कार (एक) ₹ 1800/- - श्री किशनलाल, सहायक
- द्वितीय पुरस्कार (एक) ₹ 1500/- - श्री गौरव शर्मा, वरिष्ठ लिपिक
- तृतीय पुरस्कार (एक) ₹ 1200/- - श्री गणेश चौधरी, वरिष्ठ लिपिक
- प्रोत्साहन पुरस्कार (प्रथम) ₹ 500/- - श्री विकास कुमार, वरिष्ठ लिपिक
- प्रोत्साहन पुरस्कार (द्वितीय) ₹ 500/- - श्री यशपाल जोईया, कनिष्ठ लिपिक

चाहे हो गर्मी या हो जाड़ा, शान है हमारी हिंदी पखवाड़ा।

हिन्दी निबंध प्रतियोगिता

➤ प्रथम पुरस्कार	(एक)	₹ 1800/-	-	श्री गौरव शर्मा, वरिष्ठ लिपिक
➤ द्वितीय पुरस्कार	(एक)	₹ 1500/-	-	श्री भीम सिंह चौधरी, वरिष्ठ लिपिक
➤ तृतीय पुरस्कार	(एक)	₹ 1200/-	-	श्री किशन लाल, सहायक
➤ प्रोत्साहन पुरस्कार	(प्रथम)	₹ 500/-	-	श्री प्रदीप शर्मा, वरिष्ठ लिपिक
➤ प्रोत्साहन पुरस्कार	(द्वितीय)	₹ 500/-	-	श्री गणेश चौधरी, वरिष्ठ लिपिक

महिला दिवस – 2022

कर्मचारी राज्य बीमा निगम जोधपुर के डिप्टी डायरेक्टर श्री रमेश राय, श्री राजेन्द्र कुमार मीणा एवं शाखा प्रबंधक, जोधपुर श्री राजेश लखेरा द्वारा महिला दिवस के उपलक्ष्य दिनांक 08 मार्च 2022 को चौपासनी हाउसिंग बोर्ड स्थित लवकुश बाल विकास केंद्र के संस्थान में कार्यरत महिलाओं को गिफ्ट् प्रदान उत्साह बढ़ाया एवं संस्था प्रभारी द्वारा उप क्षेत्रीय कार्यालय क.रा.बी. निगम, जोधपुर का धन्यवाद से अनुग्रहित किया।

मातृत्व हितलाभ

औषधालय सहशाखा जोधपुर की ओर से आजादी के 75वें अमृत महोत्सव के तहत मातृत्व हितलाभ के कार्यक्रम में शाखा प्रबंधक श्री राजेश लखेरा, डॉ. चंद्रप्रकाश, श्री रमेश राय, श्री कमल कुमार मीणा, श्री हीरालाल वर्मा, श्री प्रवीण शर्मा के सानिध्य में श्रीमती अनिता शर्मा, श्रीमती पुसी, श्रीमती नीलम शर्मा, श्रीमती रूबिना खानम, श्रीमती अमृता, श्रीमती रेणु पंवार व श्रीमती सीमा नागर को मातृत्व हितलाभ की राशि के चैक प्रदान किए गए।

स्वच्छता पखवाड़ा

उपक्षेत्रीय कार्यालय जोधपुर व सभी अधिनस्थ शाखा कार्यालयों द्वारा दिनांक 02.05.2022 से 14.05.2022 तक स्वच्छता पखवाड़ा बड़े ही उत्साह से सभी मनाया गया। सभी कार्मिकों ने स्वच्छता की शपथ के साथ कार्यालयों के अन्दर व बाहर साफ-सफाई की।

हिंदी में दिखती है भावनाएं, सभी को हिंदी भाषा की शुभकामनायें।

चिकित्सा सह जागरुकता शिविर का आयोजन

आजादी के 75वें अमृत महोत्सव के तहत औषधालय सह शाखा कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, जोधपुर द्वारा चिकित्सा सह जागरूकता शिविर का आयोजन दिनांक 26 मई, 2022 को मैसर्स लक्की बाल निकेतन सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, कमला नेहरू नगर, जोधपुर में किया गया। जिसमें 125 से अधिक बीमितों को चिकित्सा परामर्श प्रदान किया गया। साथ ही शिविर में ब्लड़ शुगर, ब्लड़ प्रेशर, ई.सी.जी., आंखों की जांच आदि की सेवायें निगम द्वारा अनुबन्धित निजी चिकित्सालयों व बीमा चिकित्सा अधिकारी प्रभारी द्वारा की गई।

व्यवसायजन्य (सिलिकोसिस) बीमारी हितलाभ देने में अव्वल

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, आबूरोड़ के तत्वाधान में व्यावसायिक रोग सिलिकोसिस पीड़ित बीमितों को स्थायी अशक्ता हितलाभ पेंशन पत्र वितरित करने हेतु दिनांक 29.05.2022 के आबू मार्बल एसोशिएशन, आबूरोड़ में विशेष कार्यक्रम का आयोजिन किया गया। जिसमें क्षेत्रीय निदेशक अशोक कुमार रावत की अध्यक्षता में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री देवजी पटेल, लोकसभा सांसद उपस्थित हुए। कार्यक्रम में 86 बीमितों को स्थायी अशक्ता हितलाभ पेंशन पत्र वितरित किए गए। साथ ही कोविड-19 रिलीफ स्कीम के अंतर्गत बीमित स्व. श्री गोपालराम माली, जिनकी मृत्यु कोविड-19 के कारण हुई, के परिजनों को आश्रितजन हितलाभ पेंशन पत्र सुपुर्द किया गया। गौरतलब है कि कर्मचारी राज्य बीमा निगम, उप क्षेत्रीय कार्यालय, जोधपुर अधीनस्थ शाखा कार्यालय, आबूरोड़ पूरे भारत में सर्वाधिक व्यावसायिक रोग सिलिकोसिस पीड़ित बीमितों अथवा उनके आश्रितों को हितलाभ प्रदान करने अग्रणी कार्यालयों में स्थान रखता है। वर्तमान में 200 से अधिक ऐसे प्रकरणों में हितलाभ प्रदान किया जा रहा है।

कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि श्री देवजी पटेल, लोकसभा सांसद द्वारा कर्मचारी राज्य बीमा निगम के कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा गया कि निगम द्वारा बहुत बड़े स्तर पर बीमितों को हितलाभ प्रदान किया जा रहा है। श्री पटेल द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित प्रबुद्धजनों को कर्मचारी राज्य बीमा निगम के विनियमों की अनुपालना तथा निगम के हितलाभ प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहित किया गया। क्षेत्रीय निदेशक अशोक कुमार रावत द्वारा निगम के टाई-अप अस्पतालों की जानकारी देते हुए बीमितों को केशलेस ईलाज लेने हेतु प्रेरित किया गया। श्री रावत द्वारा निगम के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित भी किया गया।

चलिए आप देर आये दुरूस्त आये, मिलकर हिंदी को ऊँचा स्थान दिलाये।

योग दिवस – 2022

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस – 2022 के उपलक्ष्य में उप क्षेत्रीय कार्यालय, जोधपुर में दिनांक 07.06.2022 से 21.06.2022 तक योगा पखवाड़ा मनाया गया, जिसमें कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिये योग शिविर का अयोजिन किया गया। इस दौरान अनन्ता योग व आयुर्वेद संस्थान के श्री राजेन्द्र कुमार के योग अनुदेशक के रूप में कार्यालय को सेवाएं प्रदान की। श्री राजेन्द्र कुमार ने कर्मचारियों को योग का प्रशिक्षण दिया, साथ ही योग से होने वाले लाभों के बारे में अवगत कराया। योग हमारे जीवन से जुडे भौतिक, मानसिक, भावनात्मक, आत्मिक एवं आध्यात्मिक आदि सभी पहलुओं पर प्रभाव डालता है। योग के सबसे अधिक ज्ञात लाभों में से एक व्यावहारिक और परिचयात्मक शुरूआत है। वर्तमान समय में अपनी व्यस्त जीवन शैली के कारण अधिकांश लोगों के लिए हालांकि योग केवल तनावपूर्ण वातावरण में स्वयं को शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रखने का मुख्य साधन है। इनके अतिरिक्त योग के केई आध्यात्मिक लाभ भी है, जिनका विवरण करना आसान नहीं है क्योंकि यह स्वयं योग अभ्यास करके अनुभव करना होता है।

वर्ष 2021 – 22 में उत्कृष्ठ कार्य करने वाले कर्मचारी

आजादी के 75वें अमृत महोत्सव के साथ स्वतंत्रता दिवस समारोह उप क्षेत्रीय कार्यालय जोधपुर में दिनांक 15 अगस्त 2022 को बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। अधिकारियों व कर्मचारियों ने इस स्वतंत्रता दिवस पर अपने कार्य को और सुदृढ़ करते हुए ई – फाईल पर कार्य करने और अपने निगम एवं देश के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठा रखने का प्रण लिया। इस समारोह में श्री रमेश राय उपनिदेशक, श्री गुरप्रीतसिंह सहायक निदेशक द्वारा वर्ष 2021 – 22 में उत्कृष्ठ कार्य करने वाले कर्मचारियों को पुरस्कार स्वरूप शील्ड भेंट की।

जब महत्व आपने हिंदी का जाना, फिर हिंदी सीखने का मिला बहाना।

लाभार्थी की पाती

मैं सीता देवी पत्नी श्री देवा राम (बिमित कर्मचारी) जाति मीणा निवासी झाड़ोली, तहसील पिण्डवाडा जिला सिरोही अपना अनुभव साझा करना चाहती हूँ। मेरे पति एक पत्थर घड़ाई के कारीगर थे जिन्होंने डिवाइन स्टोन इंटरप्राइजेज में 20 साल पत्थर घड़ाई का काम किया और पत्थर घड़ाई का काम करते हुए उनको लाइलाज बीमारी सिलिकोसिस हो गई। जब वे इस बीमारी की चपेट में आए तो उनके काम करने की क्षमता कम हो गई । सिलिकोसिस बीमारी के बाद उनके इलाज पर एक से डेढ़ लाख रुपया खर्च हो गया और जो उनको राज्य सरकार से सहायता राशि मिली वह भी दवाओं में खर्च हो गई फिर एक दिन सिलिकोसिस से उनकी मृत्यु हो गई। जब मुझे पता चल कि उनका ईएसआई था तो सिलिकोसिस से हुई मृत्यु के कारण उन्हें पेंशन मिल सकती है । मैंने ईएसआई में पेंशन के लिए आवेदन किया तो ईएसआई से प्रतिमाह रुपये 12480/- की पेंशन के आदेश जारी हुए । पिछली अवधि के लिए एकमुश्त राशि रुपये 183000/- मिली तो मुझे इस राशि से मेरे बच्चों की देखभाल करने में बहुत मदद मिली। मैं एकल विधवा महिला होते हुए भी आर्थिक और सामाजिक स्थिति में ईएसआई की सहायता से मजबूत हुई और किसी के ऊपर निर्भर नहीं रहते हुए आज मैं अपना और परिवार का गुजर स्वतंत्र रूप से करने में सक्षम हूँ ।

मैं प्रकाश कुमार पुत्र श्री जोरा राम एक सिलिकोसिस पीड़ित पत्थर घड़ाई मजदूर हूँ । मैंने 20 साल पत्थर घड़ाई का काम किया। मशीनों से काम करने के बाद से इस काम में और भी जोखिम हो गया था इसके बाद मुझे सिलिकोसिस बीमारी हो गई ।राज्य सरकार द्वारा मेडिकल बोर्ड में मुझे 27 अप्रैल 2018 से सिलिकोसिस का प्रमाण पत्र जारी किया गया। इससे पहले मेरा लाखों रुपया बीमारी के इलाज में चला गया। मैं डिवाइन स्टोन इंटरप्राइजेज में काम करता था जहां मेरा ईएसआई कटता था। मुझे ईएसआई से पेंशन का प्रावधान मालूम चलने पर मेरे मालिक ने रिपोर्ट भरी। ईएसआई द्वारा दिल्ली में मेडिकल बोर्ड करवाया गया और मुझे 90 प्रतिशत अर्जन क्षमता हानि घोषित हुई। मुझे रुपये 13500/- प्रतिमाह पेंशन शुरू हो गई। ईएसआई की इस पेंशन से मेरे आर्थिक और सामाजिक जीवन में काफी सकारात्मक प्रभाव पड़ा । मेरे परिवार का गुजारा करने के लिए जोखिम पूर्ण कार्य नहीं करना पड़ रहा। इस कारण से मेरे स्वास्थ्य में भी सुधार आया है। अगर मुझे इस तरह से पेंशन नहीं मिलती तो सामाजिक और पारिवारिक स्तर पर तिरस्कार का सामना करना पड़ता और आज सभी तरह के संबंध अच्छे हैं। मैं इस सहायता से पूरे परिवार को चलाने में आत्मनिर्भर हूँ ।

सरकारी कामों की एक ही भाषा, हिंदी है आम जनता की भाषा।

विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित उत्कृष्ट कार्य की झलकियाँ

ईएसआई बीमित आश्रितों को लाभ

विश्वास एक्सप्रेस

जोधपुर। आजादी के 75वें अमृत महोत्सव के तहत कर्मचारी राज्य बीमा निगम की ओर से निगम के बीमितों को देय हितलाभों के तहत धनराशि के चेक प्रदान किए गए।

औषधालय सह शाखा कार्यालय जोधपुर के प्रभारी चिकित्सा अधिकारी डा. चंद्रप्रकाश एवं शाखा प्रबंधक राजेश लखेरा के करकमलों द्वारा आश्रितजन हितलाभ व मातृत्व हितलाभ की राशियों के चेक प्रदान किए गए। इनमें आश्रितजन हितलाभ के तहत नैनी देवी को 5 लाख 39 हजार 840 रुपए, बशिरन बानो को 1 लाख 57 हजार 960 रुपए एवं ज्योति सोनी को मातृत्व हितलाभ के 85 हजार 722 रुपए के चेक प्रदान किए गए।

महिला दिवस विशेष : कराबी निगम की ओर से महिलाओं को बाँटे गिफ्ट्स व चेक

लवकुश गृह में जाकर नवजातों की सेवाओं में लगी महिलाओं को दिया सम्मान

जोधपुर। भारत सरकार के श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के कर्मचारी राज्य बीमा निगम की जोधपुर शाखा की ओर से 8 मार्च को मनाए गए महिला दिवस व पर महिलाओं का अनूठे अंदाज़ में सम्मान किया गया। कर्मचारी राज्य बीमा के डिप्टी डायरेक्टर रमेश राय व प्रबंधक राजेश लखेरा की ओर से ईएसआई कार्ड धारक महिलाओं को गुलदस्ता व लाखों रुपए हितलाभ के दिया गया। डीसीबीओ प्रभारी डॉ चंद्र प्रकाश व नर्सिंग ऑफिसर मुकेश कुमारी को सम्मानित कर, अनीता शर्मा को रुपए 1 लाख 20 हजार 484, पूसी को 1 लाख 3 हजार 194, नीलम शर्मा को 71 हजार 890, रुबीना खानम को 92 हजार 820, नमृता श्रीमाली को 61 हजार 334, रेनू पँवार को 57 हजार 876, सीमा नागर को 49 हजार 150 रुपए की धनराशि का चेक प्रदान किया गया। सोमवार की दोपहर के बाद 4 बजे कर्मचारी राज्य बीमा निगम के अधिकारी चौपासनी हाउसिंग बोर्ड स्थित लवकुश बाल विकास केंद्र के संस्थान गए। नवजीवन संस्थान के संरक्षक व संस्था प्रभारी राजेन्द्र परिहार से मिलकर संस्थान की गतिविधियों को जाना।

✦ वर्ष : 10 ✦ अंक : 267 ✦ जोधपुर, गुरुवार, 23 दिसम्बर, 2021

नि:शुल्क चिकित्सा सह जागरूकता शिविर का आयोजन

निजी संवाददाता

जोधपुर। कर्मचारी राज्य बीमा निगम द्वारा आजादी महोत्सव @ 75 की श्रृंखला में जोधपुर इण्डस्ट्रीज एसोसिएशन व एल.एम.जे. सर्विसेज एरिना के तत्वाधान में नि:शुल्क चिकित्सा सह जागरूकता शिविर का आयोजन दिनांक 22.12.2021 (बुधवार) को प्रातः 10 बजे से सांय 4 बजे तक जोधपुर इण्डस्ट्रीज एसोसिएशन, न्यू पावर हाउस रोड, जोधपुर में किया गया।

शाखा प्रबंधक राजेश लखेरा ने बताया कि शिविर में मुख्य अतिथि सूरसागर विधायक श्रीमती सूर्यकान्ता व्यास, विशिष्ठ अतिथि जोधपुर नगर निगम (दक्षिण) महापौर सुश्री वनिता सेठ, श्री एन.के. जैन, अध्यक्ष, जोधपुर इंडस्ट्रीज एसोसिएशन, श्री उल्हास जैन, चैयरमेन, एल.एम.जे. सर्विसेज, श्री राजेन्द्र कुमार मीणा, उप निदेशक, श्री रमेश राय, उप निदेशक, श्री के.के. मीणा,

इन्सपेक्टर, श्री प्रवीण शर्मा, इन्सपेक्टर, उप क्षेत्रीय कार्यालय, डॉ. चन्द्र प्रकाश, प्रभारी, डीसीबीओ, जोधपुर आदि की उपस्थिति में शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में कमला नगर अस्पताल, मेडिपल्स अस्पताल, गोयल अस्पताल, वसुंधरा अस्पताल, कृष्णा अस्पताल एवं ए.एस.जी. आई अस्पताल एवं डीसीबीओ की टीम द्वारा विभिन्न प्रकार की जांच एवं परामर्श प्रदान किया गया।

शिविर में सभी प्रकार के चिकित्सा परामर्श एवं जांच आदि की व्यवस्था नि:शुल्क थी। इसके अतिरिक्त उप निदेशक एवं शाखा प्रबंधक ने कराबी योजना की जानकारी प्रदान करते हुए बीमितों को योजना के सभी प्रकार के लाभों से अवगत कराया। इसके साथ ही शिविर में कोविड -19 से मृतक बीमित के आश्रितों को आश्रितजन हितलाभ के चैक वितरित किये गये।

दैनिक जलते दीप

स्वच्छता पखवाड़े के तहत पौधारोपण किया, कार्यालय परिसर साफ किया

जोधपुर, 14 मई (कासं)। कर्मचारी राज्य बीमा निगम की ओर से आयोजित स्वच्छता पखवाड़े के तहत आज पौधारोपण सहित कई कार्यक्रम किए गए।

शाखा प्रबंधक राजेश लेखरा ने बताया कि कार्यालय परिसर की पूर्ण सफाई का कार्य किया गया। जिसमें डीसीबीओ के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने हिस्सा लिया। इसी प्रकार कार्यालय के एक्वागॉर्ड की सफाई करवाई गई, जिससे कर्मचारियों एवं बीमितों को स्वच्छ एवं ठंडा पानी उपलब्ध हो। श्री लखेरा ने बताया कि औषालय यह शाखा कार्यालय के कर्मचारियों ने अपने रिकार्डस एवं फाईलों की धूल-मिटटी झाड़कर फाईलों को व्यवस्थित किया। आज औषधालय यह शाखा कार्यालय में क्षेत्रीय कार्यालय जयपुर से दौरे पर आये उप निदेशक नीज शर्मा द्वारा कार्यालय परिसर में पौधारोपण किया गया। पखवाड़े का समापन कल होगा।

हिन्दी भाषा का रखिये ज्ञान, समाज में बढाती है आपका मान।

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

क.रा.बी. योजना के बारे में

कर्मचारी राज्य बीमा योजना सामाजिक बीमा के साथ–साथ स्वास्थ्य देखरेख की एकीकृत योजना है जो कि कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम, 1948 में समाविष्ट है तथा इसे 'कर्मचारियों' (क.रा.बी.अधिनियम, 1948 में यथा परिभाषित) को बीमारी, मातृत्व, अपंगता और रोजगार चोट के कारण हुई मृत्यु जैसी घटनाओं के संबंध में सुरक्षा प्रदान करने तथा बीमाकृत व्यक्तियों एवं उनके परिवारों को चिकित्सा देखरेख प्रदान करने के कार्य को पूर्ण करने हेतु बनाया गया है। क.रा.बी. योजना उन फैक्ट्रियों तथा अन्य स्थापनाओं जैसे सड़क यातायात, होटल, रेस्तरां, सिनेमा, समाचार–पत्र, दुकानें, शैक्षिक/चिकित्सा संस्थाओं पर लागू है, जहां 10 या उससे अधिक व्यक्ति नियोजित हैं। हालांकि कुछ राज्यों में स्थापनाओं की व्याप्ति हेतु सीमा अभी भी 20 है। उपर्युक्त श्रेणियों की फैक्ट्रियों और स्थापनाओं के कर्मचारी जो ₹ 15000/– प्रति माह की मजदूरी आहरित कर रहे हैं, वे क.रा.बी. अधिनियम के अंतर्गत सामाजिक सुरक्षा के हकदार है।

क.रा.बी. योजना नियोक्ताओं तथा कर्मचारियों के अंशदान द्वारा वित्तपोषित है। नियोक्ता की अंशदान दर कर्मचारियों को देय मजदूरी का 4.75% है। कर्मचारियों के अंशदान की दर उन्हें देय मजदूरी की 1.75% है।

क.रा.बी. योजना के अंतर्गत हितलाभ

- बीमारी हितलाभ
- अपंगता हितलाभ
- आश्रितजन हितलाभ
- मातृत्व हितलाभ
- चिकित्सा हितलाभ

लाभार्थियों को दिए जा रहे अन्य हितलाभ जैसे प्रसव व्यय, अंत्येष्टि व्यय, व्यावसायिक पुनर्वास, शारीरिक पुनर्वास, बेरोजगारी भत्ता तथा कौशल–उन्नयन प्रशिक्षण हैं।

ई.एस.आई लाभार्थियों के इलेक्ट्रॉनिक हेल्थ रिकॉर्ड की ऑनलाइन उपलब्धता

अभियान इंद्रधनुष : विशिष्ट रंगों की चादरों को प्रतिदिन बदलना

आपात स्थिति और मार्गदर्शन के लिए मेडिकल

वरिष्ठ नागरिकों एवं निःशक्त व्यक्तियों के लिए विशेष ओपीडी

उप क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
1/3 व 1/4, पाल लिंक रोड़, जोधपुर - 342008 (राज.)
दूरभाष : 0291-2945025
ई-मेल : *sro-jodhpur@esic.nic.in*